www.thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2011-13

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंक:-५, नवम्बर, सन्-२०१३, सं०-२०७० वि०, दयानंदाब्द १९०, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

सन् १८८३ की काली दीवाली

जब सारे ज़माने को रौशन करने वाला चराग़ बुझ गया !

(तत्कालीन उर्दू मासिक 'आर्य समाचार' में प्रकाशित महर्षि दयानन्द के निधन के समाचार के सम्पादित अंश)

३० अक्टूबर सन् १८८३ ज्योतिपर्व दीपावली का दिन, जब महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती यश: शेष हो गये। आर्य समाज, मेरठ के तत्कालीन उर्दू मासिक पत्र 'आर्य समाचार' मेरठ ने लगभग ४० पृष्ठों में दु:खद समाचार तथा श्रद्धांजलि प्रस्तुत की थी। उन ऐतिहासिक पृष्ठों के कुछ अंश देवनागरी लिपि में अपने पाठकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं। —सम्पादक

मरना ये किसका जान से बेज़ार कर गया।
मातम में मर रहे हैं, कि ये कौन मर गया।।

जिस वक्त ये खबर बहशत असर बजरिये तार बर्की के इस समाज में आई कि उस फ़ाजिल अजल और आलमे बेमिसाल फखरुल मुल्क और मोहब्बे कौम यानी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने ३० अक्टूबर सन् १८८३ की शाम को ६ बजे इस जहान फ़ानी से रहमत फरमाई। जमाना आंखों में सियाह हो गया और सरमाया होशोहवास यक्कलम तबाह। कौन सा अन्दोह वो ग़म था कि जिसने मुंह न दुखाया। और कौन सा रंज ओ अलम था कि जो सामने न आया। खबर के सुनते ही छक्के छूट गये। लेने के देने पड़ गये। फर्ते अजतराब से कलेजा मुंह को आने लगा। जिगर गो हकीकत में पाश-पाश न हुआ मगर पाश-पाश न होने से उसका रुतबा बढ़ गया। शैल अश्क आंखों से जारी हुए और गशी की सी हालत एक-बयक तारी। गो जिन्दा थे मगर मुर्दों से बदतर हो गये। जीते जागते थे लेकिन बिस्तर अदम पर पांव फैलाकर सोनेवालों से बढ़कर। जहां तक याद है बिजली के गिरने से महदूद सा नुक्सान होता ही देखा या सुना है मगर इस खबर की तार बर्की की बिजली ने तो तमाम आर्यावर्त्त को जलाकर खाक कर दिया। हाय! हाय!!

इसी सदमा जागुजा के दर्द में आफ़ताब का रंग जर्द है। इसी हादसा होशरुबा में मेहताब मिसल हाला में सरनगूं और सर्द। इसी ग़म में गरेबां सुबह चाक हुआ है। इसी मातम में हफ्तों पहले से सुबह वो शाम आसमां लहू रो रहा था और अब भी रो रहा है।

आवाज हाय हाय की आती है मुत्तासिल।
गरदूम तिलस्म गुम्बद मातम सरा है आज।।

हाय ! आज वो महर्षि देशहितैषी जिसके चश्मये फैज से एक ज़माना फैजियाब था, कहां है? हाय आज वो शर्फ-ए-कौम अपने जमाने का वेदव्यास किस जगह है?

क्या इस आर्यावर्त्त-सा बदनसीब कोई और मुल्क होगा कि जिसका ऐसा सच्चा खैरख्वाह यूं बे वक्त नज़रों से गायब हो जाये। और क्या हम-सा कम नसीब कोई और रूए जमीन पर ढूंढा मिलेगा जिनका ऐसा लायक और दिली शुभचिन्तक यूं यकायक उनसे छूट जाये। क्या इस आर्यावर्त्त देश का बुढ़ापा इस लायक था कि उसका ऐसा सरपरस्त और दस्तगीर यूं जल्द उठ जाये। और क्या हमारी हालत अभी इस काबिल थी कि हमारा ऐसा लासानी मददगार इस रियाये नापैद किनार से अपना बेड़ा पार कर हमको मझधार में यूं डूबता छोड़ जाये।

वो भी होगा कोई उम्मीद बराये जिसकी
अपना मतलब तो न उस चर्ख-ए-कोहन से निकला।

जब इस सदमा-ए-जांगुजां से जरा होश आया तो बहज़ार अफसोस कलेजा को मसोस अहलियाने समाज को समाज के मन्दिर में आने और आर्यावर्त्त के मातम में शरीक होने के लिये नोटिस दिया गया। मग़र हाय! जिसने नोटिस देखा वही सुन्न हो गया था, जो खड़ा था खड़ा रह गया और जो बैठा था बैठा रह गया। हर एक-दूसरे के मुंह को ताकता था और सकते के आलम में था कि हैं! कल तो ये खबर थी कि स्वामी जी को कुछ-कुछ आराम है, हाय! आज दफैतन ही क्या था क्या हो गया। अलग़रज़ बसद नाला वो आह कराह- कराह समाज तक पहुंचे। और हैरान को परेशान बसूरत नक्श बद दिवार बैठ गये। समाज का मकान मातम सरा बन रहा था। हरेक के लब पर नाला वो आह था। दिल को हाथों से थामते थे मगर थमता न था। तबीयत को बहुत कुछ रोकते थे मगर ज़ब्त न होता था कि इतने ही में वक्त मुकर्रिर पर मुंशी ज्योति स्वरूप साहब ने जो इस समाज के एक बड़े लायक और फ़ायक मैम्बर हैं उठकर इस हादसे जां कहाय को जिसपर आंखों से खून बहाने और दिल की हसरत को रो-रोकर बाहर

निकालने के लिये सब जमा हुए थे, बयान करना शुरू किया। अव्वल तो ये हादसा ही गज़ब का जां कहा था और फि हमारे मुंशी साहब का वो पुर तासीर बयान की वाह! वाह!! फिकरे-फिकरे पर सामयीन के कलेजे फटे जाते थे। और जुमले-जुमले पर दिलों के टुकड़े हुए जाते थे। अस्नाये बयान में सुनने वालों को रुला-रुला दिया और खुद से भी गो निहायत ही साबित कदम और मुश्तकिल मिजाज है, रहा न गया और दिल भर आया।

मुंशी साहब ने इस हादसे की निस्बत एक घंटे से ज्यादा तक निहायत दर्द के साथ बयान किया और उसके आखिरी हिस्से में नसीहत आमेज नतीजे को भी जिससे सामयीन जुरत अख्यार करें और इस हादसे की वजह से हिम्मत न हारें। मगर चूंकि दिल निहायत भर आया था और थामा न थमा इसीलिये इसी पर अपने बयान को खतम किया और ये मातमी जलसा भी उसके साथ ही बरखास्त हुआ। चूंकि ये बयान जबानी था इसीलिये खत तहरीर में नहीं आ सका मगर बजाये तहरीव जेल्को हदिया नाजरीन किया जाता है।

रो-रो ऐ आर्यावर्त्त !
आज तेरी फज़ीलत का सूरज गरूब हो गया।

बरस दिन का दिन खास दिवाली का त्यौहार है मगर शमै है न चिराग है, न गन्जफ़ा है न चौसर है। हां, भुचक वो जरान भयानक व परेशान-ऐ दोस्तों ! आज आर्यावर्त्त की क्या हालत है- लब पै आहे सर्द जबान पर नाला पर दर्द आंखों से टप-टप आंसू जारी, सुनो-सुनो ये क्या कह रहा है-

दरीग़ा ऐ फ़लक बामन च करदी।
रसांदी आफ़ताबम रा बज़र दी।।

आह! सामने देखो ये ताशा किसका पड़ा है। आंखें बन्द हैं, हाथ-पांव सुस्त हैं। अहो! ये ताके मोहन कोम वो फखरुल मुल्क श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी फ़ाजिल तजरहीन कि जिनके रिफार्मेशन का बुलन्द आवाज़ इस तमाम ब्रह्माण्ड में भरा हुआ है। हाय! आज परमधाम को सिधार गये। ऐ मेरे प्यारे!

कल ये सुनते थे कि वो बिस्तर से उठ सकते नहीं, आज ये ताकत हुई दोनों जहान से उठ गये।

ये क्या कर चले कहां के सफर का सामान कर दिया। जो काम पेश निहाद खातिर मुबारिक था क्या उसको इसी तरह नातमाम छोड़ जाओगे? इस बूढे आर्यावर्त्त पर ये क्या सितम करते हो। ये आपकी जबान जिसके सदुपदेशों की तासीर ने एक आलम पर तशखीर का असर पैदा कर दिया था क्यों दफैतन बन्द हो गये। ये आपके हाथ जिन्होंने मुल्की खिदमत में कभी दरेग नहीं किया, क्यों मोअल्लन सुस्त हो गये। ये आपके पांव जिन्होंने कौमी रिफार्मेशन के लिये मंजिलें दम के दम में तय की थीं, क्यों एक ही जगह रह गये। ये आपकी आंखें जिन्होंने मोहब्बत कौमी में कभी पलक नहीं झपाई, क्यों तमाम मुल्क की तरफ से बन्द हो गई। ये आपका दिमाग जो सच्चे ख्यालात का समन्दर था, क्यों खुश्क हो गया। वो आपकी सादीक नसीहतों की मोती कहां गुम हो गये। वो आपकी पुरजोश तबीयत जो वैदिक धर्म के कमालात से मामूर थी कहां फनां हो गये। हाय! आप जैसे फ़ख़्र मुल्क और मसलह, कौम अपने अजीज मुल्क को यूं छोड़कर चल बसे। अभी तो आपके करने को बहुम कुछ बाकी था। ये क्या कर चले और कहां चल दिये। जरा इस देश की तरफ एक नजर तो और देख लो। देखो ये आपके सराहने खड़ा रो रहा है, कुछ तो तशकीन दे जाओ। एक मर्त्तबा तो जरा लब खोलो, कुछ कहते तो जाओ। हाय! यारो! अब स्वामी जी कहकर किसको पुकारेंगे। अदक मनाजिल वैदिक धर्म में किसके सहारे कदम धरेंगे। हमारे दिल पुरदर्द की कौन तसल्ली करेगा।

(साभार : 'ओ३म्-सुप्रभा', वर्ष-७, अंक-३)

विनय पीयूष

जिसका आश्रय अमृत है !

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु० 25/13)

जो आत्मा का है,
बल का दाता है,
ज्ञानरूप विद्वानों में
पूजा जाता है;
जिसका आश्रय अमृत है,
अन्यथा मृत्यु है,
सुख-स्वरूप उस प्रभु को
अपना हवि दें हम !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

भविष्य की अगवानी

सत्रहवीं शताब्दी में देशहित के विरुद्ध कार्यरत भ्रष्टाचार और उत्पीड़न में लिप्त सम्प्रदायवादी ताकतों के मन में शिवाजी के रूप में एक राष्ट्रवादी न्यायप्रिय प्रचण्ड सांस्कृतिक शक्ति के अभ्युदय से जो बेचैनी, आशंका, भय और विक्षोभ पैदा हो रहा था, उसका वर्णन तत्कालीन कवि भूषण ने अनेक छंदों में किया, उनमें कवि द्वारा रचित बावन छंद विशेष लोकप्रिय हुए तथा जन जन के कंठहार बन गये। इन ५२ छंदों को 'शिवाबावनी' के नाम से प्रसिद्धि मिली। 'शिवाबावनी' की छंद संख्या ३४ में कवि भूषण ने यह बताया है कि किस तरह जगह जगह पर अनाचार सत्ताधीशों में शिवाजी का उत्कर्ष चिन्ता का विषय बना हुआ था और वे यह जानने के प्रयास में रहते थे कि शिवाजी की फौजें कहाँ तक पहुँच गई हैं। 'शिवाबावनी' का यह रोचक छंद इस प्रकार है-

अफजल खान जू को मार्‍यौ मैदान जामैं,
बीजापुर गोलकुंडा डार्‍यौ दराज है।
'भूषन' भनित धरासायी अंगरेज कीन्ह्यौ,
हबसी फिरंगी मारे उलटि जहाज है।
देखत मैं रुस्तम को छिन मैं खराद कियौ,
तन हेरि संगर की आवत अवाज है।
चौंकि चौंकि चकता कहत चहुँधा ते, यारौं,
लेत रहौ खबरि कहाँ लौ सिवराज है।।

इन पंक्तियों में राष्ट्रहितों के विपरीत कार्य करने वाले सत्ताधीशों ने अनुयायियों को आदेश दिया है कि शिवाजी के काफिले कहां तक पहुंचे हैं, यह पता लगाते रहें। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में २०१४ के लोकसभा चुनावों के संदर्भ में नरेन्द्र मोदी की उभरती हुई शक्ति और उनकी रैलियों में स्वतःस्फूर्त उमड़ते हुए जनसैलाब को देखकर लगभग यही हालत आज के सत्ताधारियों की भी है। शुतुरमुर्ग की तरह सम्प्रदाय विशेष के प्रति समर्पित पक्षपात की रेत में अपनी गर्दन गड़ाये हुए नेताओं को कहीं भी नरेन्द्र मोदी भले ही नजर न आते हों किन्तु पूर्व गृहमंत्री तथा वर्तमान वित्तमंत्री श्री चिदम्बरम जैसे वरिष्ठ नेता ने कहा है कि- नरेन्द्र मोदी के बढ़ते हुए प्रभाव को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। नीतीश कुमार तो तभी से भयाक्रान्त हैं; जब से नरेन्द्र मोदी के नाम की प्रधानमंत्री पद का संभावित उम्मीदवार के रूप में घोषणा की गई है। नीतीश जी इतने हतप्रभ हैं कि उन्हें यह भी ज्ञात नहीं कि वे कह क्या रहे हैं?

नीतीश कुमार कहते हैं- 'मुझे मोदी की तरह रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने का अनुभव नहीं है।' क्या नीतीश जी यह बताने का कष्ट करेंगे कि रेलवे स्टेशन पर किसी बालक का चाय बेचना कोई निन्दनीय कार्य है? यह तो भारतीय वसुंधरा के लिए गर्व की बात है कि यदि उसका स्टेशन पर चाय बेचने वाला पुत्र देश का प्रधानमंत्री बन जाता है। 'जर्रा' के 'नैयरे आजम' बनने की दास्तान क्या नीतीश के कर्ण कुहरों तक नहीं पहुंची? गोस्वामी तुलसी दास की यह अर्द्धाली क्या उन्हें कहीं सुनाई नहीं दी-

गगन चढै रज पवन प्रसंगा,
की चहु मिलै नीच जल संगा।

नीतीश का विभ्रम यहीं तक नहीं सीमित रहता है। पटना रैली तथा उसके बाद पीड़ितों के घरों तक पहुंचने पर नीतीश कहते हैं कि बिहार से बाहरी कचड़े को निकाल कर बाहर फेंक दो। सोचने वाली बात है कि अगर नीतीश नरेन्द्र मोदी के संदर्भ में यह बात कह सकते हैं तो वे राज ठाकरे को किस मुंह से रोकेंगे जो कहता है- मुम्बई से बिहारियों को निकाल कर बाहर फेंक दो। नेतृत्व से वाणी-संयम की अपेक्षा की जाती है, फिर जो मुख्यमंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित है, उसकी शोभा शालीनता में ही अन्तर्निहित होती है। मेधामूर्ति श्री जयराम रमेश का कहना है कि 'राहुल गांधी यदि हार भी जाते हैं, तो उनका भविष्य सुरक्षित है किन्तु नरेन्द्र मोदी यदि चुनाव हारते हैं तो उनका भविष्य ही समाप्त है।' रमेश जी का यह वक्तव्य अनजाने में ही न.मो. के पक्ष में जाता है। अर्थात् राहुल गांधी का चुनाव जीतना उतना जरूरी नहीं जितना नरेन्द्र मोदी का। रमेश जी का संदेश है- 'मोदी जी को जिताकर उसके भविष्य की रक्षा करो।' इसी बीच सबसे सधी हुई प्रतिक्रिया सौम्य मुख्यमंत्री फारुख उमर की आई है। उमर कहते हैं कि देश में नेरन्द्र मोदी की लहर नहीं है, बल्कि असर है। मानी हुई बात है कि लहर में स्थायित्व नहीं होता है। लहरें बनती बिगड़ती रहती है। किन्तु असर में स्थायी होता है।

सौरमंडल से उस समय एक विचित्र संयोग उपस्थित हो जाता है, जब विपरीत ध्रुवों के दो ग्रह आमने सामने होते हैं। भूमंडल पर भी कभी कभी ही ऐसा अवसर आता है जब दो भिन्न दिशाओं में कार्यरत व्यक्तित्व एक जगह पर होते हैं। ३० अक्टूबर २०१३ धरती पर एक ऐसा ही संयोग लेकर आया जब अहमदाबाद में सरदार पटेल स्मारक के उद्घाटन के अवसर पर भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह तथा भावी प्रधानमंत्री पद हेतु संघर्षरत नरेन्द्र मोदी एक दूसरे के रूबरू थे।

वर्तमान और भावी दोनों प्रधानमंत्रियों में भारी समानता दृष्टिगत होती है। मनमोहन सिंह भी हलकी दाढ़ी रखते हैं और नरेन्द्र मोदी भी। नरेन्द्र मोदी कभी कभी जब सर पर पगड़ी रख लेते हैं तो मनमोहन से उनकी समानता में कई गुना वृद्धि हो जाती है। नाम में भी साम्य है। मनमोहन का अर्थ है मन को मुग्ध करने वाला और मोदी का अर्थ है प्रमुदित करने वाला। अब रह गयी बात दो शब्दों की- 'सिंह' और 'नरेन्द्र'। दोनों ही शासक हैं- सिंह अगर जंगल का शासक है तो नरेन्द्र मनुष्यों को। नाम-साम्य के साथ ही वैचारिक साम्य भी कुछ कम नहीं है। विशेषकर सरदार वल्लभभाई पटेल को लेकर दोनों ही श्रद्धा-नत और गौरवान्वित हैं।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१३५

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

न्याय-दया विवेक

(प्रश्न) फिर दया और न्याय दो शब्द क्यों हुए? क्योंकि उन दोनों का अर्थ एक ही होता है तो दो शब्दों का होना व्यर्थ है। इसलिये एक शब्द का रहना तो अच्छा था। इससे क्या विदित होता है कि दया और न्याय का एक प्रयोजन नहीं है।
(उत्तर) क्या एक अर्थ के अनेक नाम और एक नाम के अनेक अर्थ नहीं होते?
(प्रश्न) होते हैं।
(उत्तर) तो पुनः तुमको क्यों शंका हुई?
(प्रश्न) संसार में सुनते हैं इसलिये।
(उत्तर) संसार में तो सच्चा झूठा दोनों सुनने में आता है परन्तु उसका विचार से निश्चय करना अपना काम है।

देखो; ईश्वर की पूर्ण दया तो यह है कि जिसने सब जीवों के प्रयोजन सिद्ध होने के अर्थ जगत् में सकल पदार्थ उत्पन्न करके दान दे रक्खे हैं। इससे भिन्न दूसरी बड़ी दया कौन सी है? अब न्याय का फल प्रत्यक्ष दीखता है कि सुख दुःख की व्यवस्था अधिक और न्यूनता से फल को प्रकाशित कर रही है इन दोनों का इतना ही भेद है कि जो मन में सबको सुख होने और दुःख छूटने की इच्छा और क्रिया करना है और बाह्य चेष्टा अर्थात् बन्धन छेदनादि यथावत् दण्ड देना न्याय कहाता है। दोनों का एक प्रयोजन यह है कि सब को पाप और दुखों से पृथक कर देना।
(प्रश्न) ईश्वर साकार है वा निराकार?
(उत्तर) निराकार। क्योंकि जो साकार होता तो व्यापक नहीं हो सकता। जब व्यापक न होता तो सर्वज्ञादि गुण भी ईश्वर में न घट सकते। क्योंकि परिमित वस्तु में गुण कर्म स्वभाव भी परिमित रहते हैं तथा शीतोष्ण, क्षुधा, तृषा और रोग, दोष, छेदन, भेदन आदि से रहित नहीं हो सकता। इससे यही निश्चित है कि ईश्वर निराकार है। जो साकार हो तो उसके नाक, कान, आंख आदि अवयवों का बनानेहारा दूसरा होना चाहिए। क्योंकि जो संयोग से उत्पन्न होता है उसको संयुक्त करने वाला निराकार चेतन अवश्य होना चाहिए। जो कोई यहां ऐसा कहै कि ईश्वर ने स्वेच्छा से आप ही आप अपना शरीर बना लिया तो भी वही सिद्ध हुआ कि शरीर बनने के पूर्व निराकार था। इसलिए परमात्मा कभी शरीर धारण नहीं करता किन्तु निराकार होने से सब जगत् को सूक्ष्म कारणों से स्थूलाकार बना देता है।
(प्रश्न) ईश्वर सर्वशक्तिमान् है वा नहीं?
(उत्तर) है। परन्तु जैसा तुम सर्व शक्तिमान शब्द का अर्थ जानते हो वैसा नहीं। किन्तु सर्वशक्तिमान शब्द का यही अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित भी किसी की सहायता नहीं लेता अर्थात् अपने अनन्त सामर्थ्य से ही सब अपना काम पूर्ण कर लेता है।
(प्रश्न) हम तो ऐसा मानते हैं कि ईश्वर चाहै सो करे क्योंकि उसके ऊपर दूसरा कोई नहीं है।
(उत्तर) वह क्या चाहता है? जो तुम कहो कि सब कुछ चाहता और कर सकता है तो हम तुम से पूछते हैं कि परमेश्वर अपने को मार, अनेक ईश्वर बना, स्वयं अविद्वान्, चोरी, व्यभिचारादि पाप कर्म कर और दुःखी भी हो सकता है? जैसे ये काम ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के विरुद्ध हैं तो जो तुम्हारा कहना कि वह सब कुछ कर सकता है, यह कभी नहीं घट सकता। इसलिए सर्वशक्तिमान शब्द का अर्थ जो हमने कहा ठीक है। *(क्रमशः)*

वेदांजलि

कौन-से महान गुण देश को स्वाधीन रख सकते हैं?

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

**सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।।**

–अथर्व:12/1/1

शब्दार्थ–

(**सत्यम्**) सत्य (**बृहत्**) उद्यम (**ऋतम्**) सरल, निश्छल व्यवहार (**उग्रम**) वीरता (**दीक्षा**) नियम निष्ठा (**तपः**) द्वन्द्वों की चिन्ता किये बिना कर्त्तव्य पालन (**ब्रह्म**) आस्तिकता (**यज्ञः**) मिलकर काम करने की भावना ये आठ गुण (**पृथिवीम्**) मातृभूमि की स्वाधीनता को (**धारयन्ति**) धारण करते हैं, सुरक्षित रखते हैं। (**भूतस्य**) अतीतकाल की (**पत्नी**) रक्षा करने वाली (**सा**) वह (**नः**) हमारी (**पृथिवी**) मातृभूमि (**नः**) हमारे लिए (**उरुम्**) विस्तृत (**लोकम्**) क्षेत्र को (**कृणोतु**) करे।

व्याख्या–

इस मंत्र में राष्ट्रोत्थान के लिए नागरिकों में आठ गुणों का होना आवश्यक बताया गया हैं। उन सब गुणों पर संक्षेप से विचार कीजिये। स्वाधीनता की रक्षा और देश के विकास के लिए पहला गुण 'सत्य' बताया गया है। सत्य की अवहेलना करके कोई राष्ट्र न सशक्त हो सकता है और न समृद्ध। इसी रहस्य को समझकर हमारे ऋषि–महर्षियों ने **'सत्यमेव जयते'** का नारा बुलन्द किया था। भारत के नेताओं ने भी इसे ही अपना आदर्श माना था, किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से हम इससे बहुत दूर चले गए हैं।

मंत्र में दूसरी बात कही **'बृहत्'**। लोक में बृहत् शब्द बड़े और महान् के अर्थ में प्रचलित है, किन्तु यह शब्द संस्कृत की 'बृहू उद्यमने' धातु से बना है, अतः इसका मुख्य अर्थ हुआ उद्यम, उद्योग। इस अर्थ की संगति इस प्रकार भी लगाई जा सकती है कि संसार में जो उद्योगी और पुरुषार्थी होते हैं, वे ही महान् होते हैं।

अब क्रमप्राप्त तीसरा गुण है **'ऋत'**। सामान्यतया ऋत शब्द सत्य का पर्याय समझा जाता है, किन्तु वेद और औपनिषत् साहित्य में यह सरल और निश्छल व्यवहार के लिए भी बहुधा प्रयुक्त हुआ है। समाज के स्वस्थ विकास के लिए इस गुण की बड़ी आवश्यकता है।

इसके आगे आया **'उग्रम'**–वीरता। यह गुण भी राज्य की सुरक्षा और स्थायित्व के लिए परमावश्यक है। सत्य की रक्षा के लिए शक्ति की परम आवश्यकता है। बुरी प्रकृति के व्यक्ति शक्ति के अंकुश से ही मर्यादित रह सकते हैं। संसार के प्रथम शासक और संविधान निर्माता मनु ने दण्ड–शक्ति के प्रयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला है–

**दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्म बिदुर्बुधाः।।**

'दण्ड ही सब प्रजा पर शासन करता है, दण्ड ही जनता का संरक्षण करता है, सोते हुओं में दण्ड ही जागता है, अर्थात् दण्ड के भय से चोरी–जारी नहीं होती, इन गुणों के कारण विचारशील मनुष्य दण्ड को ही धर्म कहते हैं।' *(मनु.७/१४)*

मंत्र में इससे अगला गुण बताया **'दीक्षा'**। यहां इसका अर्थ 'नीति या नियमनिष्ठा' लेना उचित होगा। इससे शक्ति का दुरुपयोग नहीं होगा और दूसरों के आक्रामक कामों का प्रतिरोध भी हो सकेगा। महाभारतकाल में योगिराज कृष्ण की नीति–निपुणता ने ही पाण्डवों को विजयी बनाया और मर्यादा की रक्षा की। चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री चाणक्य का भी नीति–कौशल प्रसिद्ध ही है।

इसके आगे मंत्र में आया **'ब्रह्म'**। इसके भी ईश्वर, वेद विज्ञानादि अनेक अर्थ हैं, उनमें से यहां आस्तिकता और धार्मिकता का भाव ग्रहण करें। इस गुण के बिना व्यक्ति के व्यवहार में पवित्रता नहीं आती। हमारे प्रत्येक अच्छे और बुरे कर्म का साक्षी भगवान् है, उससे मनुष्य बाहर के भले–बुरे कर्मों की तो बात ही क्या, मन के संकल्प–विकल्प भी नहीं छिपा सकता। वह साक्षी भी ऐसा है कि जो अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा फल अवश्य देता है। यह ज्ञान होते ही मनुष्य अच्छे ही काम करेगा, बुरे नहीं) क्योंकि मनुष्य पाप भी तो लाभ और सुख की इच्छा से ही तो करता है।

इसके आगे आठवां और अन्तिम गुण मंत्र में गिनाया **'यज्ञ'**–मिलकर काम करना। भारतीय अब इस कला को भूल गये हैं। इनका सम्मिलित कोई कार्य देर तक नहीं चलता। मिलकर चलने के लिए उदारता और निरभिमानता परम आवश्यक है। सम्मिलित कार्य में क्षुद्र स्वार्थ की भावना तो आनी ही नहीं चाहिए। यह शब्द 'यज्' धातु से बना है और इस धातु के देवपूजा, संगतिकरण और दान, ये तीन अर्थ हैं। समुदाय में मिलकर काम करने के लिए इससे अधिक उपयुक्त दूसरा शब्द नहीं मिल सकता। जो देव हैं, विद्या, बल और आयु में बड़े हैं उनकी पूजा–आदर करो। यह समाज–संगठन का पहला सूत्र है।

("श्रुति सौरभ" से साभार)

www.thearyasamaj.org

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-६७

श्रुतीनां पुण्यानां त्वमुपनिषदां सारमथवा
नवं वा विज्ञानं जनगणहितं वीक्ष्य वदसि।
ततः सामंजस्यं वदसि गुणदोषेन विधिना
तवायं सन्मार्गो जडमतिजनोद्बोधनकरः।।

जब तुम पवित्र वेदों का अथवा
उपनिषदों का सार बताते हो या
नवीन विज्ञान की उपलब्धियों पर
प्रवचन करते हो,
तब जनगण का हित—साधन ही
तुम्हारा मुख्य उद्देश्य होता है।
इन सभी विधाओं के गुण—दोषों की
समीक्षा करके
उनमें स्थापित करते हो ;;
हे संन्यासी ;
तुम्हारी यह कार्यशैली और
सन्मार्ग इतना प्रभावशाली है कि
बुद्धिहीन लोग भी जागरूक
हो जाते हैं ;;

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा : विवाह संस्कार में 'सप्तपदी' का क्या महत्त्व है? इसका अभिप्राय क्या है? कृपया जानकारी दें। *-डी.डी.पाण्डे, उमरगा, उस्मानाबाद, म.प्र.*

समाधान : विवाह संस्कार में 'सप्तपदी' बहुत महत्त्वपूर्ण है। लिखा है- 'यावत् सप्तपदी नास्ति तावत् कन्या कुमारिका'। इस विषय में 'अष्टाध्यायी' में एक सूत्र आता है-'सप्तपदीनम् भूसरूयम्' अर्थात् जिसके साथ सात पैर चल लेते हैं वह सदा कि लिए मित्र हो जाता है। इससे प्रतीत होता है कि हमारे रीति रिवाज कितने पुराने हैं और इनका कितना महत्व है। परन्तु दुःख है आजकल की पाश्चात्य संस्कृति के असर से सबकुछ विस्मृत होता जा रहा है, क्या ये देश की उन्नति है? अथवा अवनति? किसी शायर ने कहा है-

इस दौर में तरक्की के अन्दाज निराले हैं।
घर घर में अंधेरे हैं, सड़कों पे उजाले हैं।।

-नरदेव आर्य
प्रधान, आर्यसमाज, मानसरोवर, लखनऊ

● सप्तपदी का अर्थ ही सात पगों-सात कदमों वाली क्रिया है। विवाह संस्कार में वर-वधू दोनों ने सप्तपदी तक जो क्रियायें की हैं, सप्तपदी एक प्रकार से उन सबका उपसंहार है।

मण्डपो मधुपर्कश्च लाजा होमस्तथैव च।
यावत् सप्तपदी नास्ति तावत् कन्या कुमारिका।।
पतित्वं सप्तमे पदे.....।
(कर्मप्रदीप)

मण्डप, मधुपर्क तथा लाजाहोम हो जाने पर भी सप्तपदी न होने तक कन्या कुमारी ही रहती है। सप्तपदी के सातवें पग के बाद ही वर वधू के पतिभाव को प्राप्त होता है। सप्तपदी के पश्चात् वधू पति के गोत्र में प्रविष्ट हो जाती है और अपने गोत्र से च्युत हो जाती है। बस, यही महत्त्व और यही गौरव प्राप्त है सप्तपदी क्रिया को। आजकल भी न्यायालयों में सप्तपदी को विवाह की पूर्णता का मुख्य अंग माना गया है।

इसलिए समझना चाहिए कि वर-वधू के परस्पर वैवाहिक समझौते की यह अति महत्वपूर्ण क्रिया है। इस क्रिया के साथ ही विवाह संस्कार इहलौकिक तथा पारलौकिक दृष्टि से मान्य और पूर्ण हो जाता है।

(स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती कृत 'शंका समाधान' से)

स्वतंत्रता संग्राम और आर्य समाज

-आचार्य दीपंकर

किसी भी पराधीन देश में किसी समाज के प्रगतिशील होने का लक्षण उसका अपने स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी ही हो सकता है। इस दृष्टि से विचार करने पर आर्य समाज सबसे अग्रिम पंक्ति में है। देश का बड़े से बड़ा कांग्रेस नेता आर्य समाज के मार्ग से गुजरकर आया है। इसी तरह, सशस्त्र क्रान्तिकारी संघर्षों के वीर सेनानी मुख्यतः आर्य समाजी रहे हैं। सरदार भगत सिंह, हंसराज, शुकदेव, पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रौशन सिंह और अन्य क्रान्तिकारी जाने-पहचाने आर्य समाजी थे। सरदार भगतसिंह का पूरा परिवार अर्थात् सरदार किशन सिंह, अजीत सिंह आदि प्रमुख आर्य समाजी थे। लाला हरदयाल एम.ए., राज महेन्द्र प्रताप आदि इसी वर्ग में आते हैं और लाल लाजपत राय तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा के बारे में तो सभी लोग जानते हैं।

कुछ दिनों तक हैदराबाद मुक्ति आन्दोलन, जिसका संचालन आर्य समाज ने किया था, एक साम्प्रदायिक आन्दोलन कहकर धिक्कारा जाता रहा। परन्तु जल्दी ही कांग्रेस नेतृत्व को होश आया और उसे स्वतंत्रता संग्राम का ही हिस्सा माना जाने लगा है।

आर्य समाज की ओर से स्वामी दयानन्द के समय छेड़े गये समाज सुधार के आन्दोलन आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम के भी एकमात्र कार्यक्रम बन जाते हैं। जैसा कि कहा जा चुका है कि गान्धी जी के दक्षिण अफ्रीका से लौट आने और कांग्रेस का नेतृत्व संभाल लेने के बाद जो रचनात्मक अभियान छेड़े गये वे सभी वे थे जिन्हें कभी आर्य समाज ने प्रारम्भ किया था। छूआछूत प्रथा का उन्मूलन, जाति भेद का अंत, स्त्री जाति के लिए समानता का अधिकार, कन्या शिक्षा, विधवा विवाह, सती प्रथा का अंत, राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास और प्रसार, भारतीय इतिहास का अनुसन्धान, रामराज्य की कल्पना और अन्त्योदय आदि आन्दोलन पहले अराजनीतिक माने जाते थे। ये सभी आर्य समाज की कार्यसूची में थे। परन्तु बाद में ये ही सब राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम के प्रमुख कार्यक्रम बन गये।

इनमें सबसे अधिक रोचक कार्यक्रम आर्य समाज के दस नियम हैं। प्रारम्भ के तीन नियम आर्य समाजियों के लिए ही हो सकते हैं और वे धार्मिक कार्यक्रम माने जा सकते हैं। परन्तु जहाँ तक शेष सात नियमों का संबन्ध है वे सभी केवल आर्यजनों के लिए नहीं बल्कि सभ्य कहे जाने वाले मानव मात्र के लिए आचार संहिता का महत्व रखते हैं। इनमें भी नौंवा और दसवां नियम आर्यजनों को खींचकर कार्ल मार्क्स के पास ले जाता है। नौंवे नियम में कहा गया है कि "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिए।" दसवें नियम में कहा गया है कि "सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।"

दसवां नियम उच्छृंखल स्वतंत्रता पर रोक लगाता है जिस पर अत्यधिक बल देने से पश्चिम के 'लोकतंत्रवादियों' ने लेनिन को तानाशाह कहकर पुकारा था। एक की स्वतंत्रता यदि दूसरे की परतंत्रता या दासता का कारण बनती है अथवा मेरी समृद्धि से यदि दूसरे की दरिद्रता बढ़ती है तो सच्चा लोकतंत्र इसका कैसे समर्थन कर सकता है। इस तरह महान् सामाजिक क्रान्तिकारी दयानन्द सरस्वती और विश्व के महान क्रान्तिकारी लेनिन एक दूसरे की भाषा बोलते दीखते हैं।

कसौटी पर खरा संगठन

यह ठीक है कि स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना विशुद्ध सांस्कृतिक सामाजिक उत्थान की संस्था के रूप में की थी। ऐसा करना तर्कसंगत भी था। परन्तु १९४२ के स्वतंत्रता संग्राम में आठ महीने तक भूमिगत रहकर अपने फरार जीवन में मैंने जो अनुभव किये उससे प्रमाणित कर सकता हूँ कि आर्य समाज और आर्यजन स्वामी जी की देशभक्ति पर पूरी तरह खरे उतरे हैं।

मुझे फरार जीवन में अम्बाला, लाहोर, अमृतसर, स्यालकोट, लालामूसा, झेलम, रावलपिण्डी, पेशावर, खानेवाल, सरगोधा और मुल्तान आदि नगरों के आर्य समाज मन्दिरों में ठहरकर आन्दोलनकारियों से सम्पर्क साधते समय यह अनुभव हुआ कि स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए आर्य समाज मन्दिर भरोसे के शिविर हैं। वहां बिना किसी भय के टिका जा सकता है और स्वतंत्रता के लिए काम किया जा सकता है। ऐसा अनुभव मेरा अकेले का नहीं है। अन्य क्रान्तिकारियों से जेलों में बात करते समय पता चला कि वे भी अपने भूमिगत जीवन में आर्य समाज मन्दिरों में शरण लेते रहे हैं।

कोई भी संस्था अपने संस्थापक के आदर्शों के अनुरूप ही ढलती है और कार्य करती है। आर्य समाज आन्दोलन पर स्वामी जी के विचारों की छाप नहीं होती तो डी.ए.वी.कालिजों, गुरुकुलों और गुरुकुल महाविद्यालयों से इतनी बड़ी संख्या में तैयार होकर स्वतंत्रता सेनानी मैदान में न उतरते। ●

वाचनालय से

'गैर मुस्लिम नहीं कर सकेंगे 'अल्लाह' शब्द का इस्तेमाल' समाचार देते हुए **'दैनिक जागरण'** लिखता है कि मलेशिया की एक अपीली अदालत ने व्यवस्था दी कि गैर मुस्लिम भगवान के सन्दर्भ में 'अल्लाह' शब्द का इस्तेमाल नहीं करेंगे। तीन मुस्लिम न्यायाधीशों की पीठ ने सर्वसम्मति से निचली अदालत द्वारा 2009 में दिये गये उस फैसले को पलट दिया, जिसने मलय भाषा में छपने वाले अखबार 'द हेराल्ड' को अल्लाह शब्द के इस्तेमाल की अनुमति दी थी। मुख्य न्यायाधीश मुहम्मद अपांदी अली ने कहा कि अल्लाह शब्द का प्रयोग ईसाई समुदाय की आस्था का अंग नहीं है। इस शब्द के इस्तेमाल से समुदाय में भ्रम की स्थिति उत्पन्न होगी। मामले की सुनवाई के दौरान सरकार ने दलील दी थी कि अल्ला शब्द मुस्लिमों के लिये बहुत विशिष्ट है।...फैसला आने के बाद अदालत के बाहर सैकड़ों की संख्या में खड़े मुस्लिम समुदाय के लोग बेहद खुश दिखे। इस बीच द हेराल्ड के संपादक लारेंस एंड्रू ने कहा है कि वह फैसले के खिलाफ उच्च अदालत में अपील करेंगे। मलेशिया की 2.8 करोड़ की आबादी में दो तिहाई मुसलमान हैं। जबकि नौ प्रतिशत आबादी ईसाईयों की है।

'साऊदी सरकार ने महिलाओं को चेताया, ड्राइविंग की तो दी जायेगी सख्त सजा' यह समाचार देते हुए **'दैनिक भास्कर'** लिखता है कि साऊदी अरब में महिलाओं के वाहन चलाने पर प्रतिबन्ध को तोड़कर सड़क पर उतरने का मन बना चुकी महिलाओं को प्रशासन ने कड़ी चेतावनी दी है। साऊदी अरब के गृह मंत्रालय ने दोहराया है कि प्रतिबंध को तोड़ने वाले को दंडित किया जायेगा।... महिलाओं को सीमित अधिकार देने वाले इस देश में करीब 17 हजार लोग इस बार महिलाओं के साथ खड़े हैं। इन लोगों ने एक ऐसी याचिका पर हस्ताक्षर किये हैं, जिसमें कहा गया है कि या तो महिलाओं को वाहन चलाने की अनुमति दी जाये अथवा यह स्पष्ट किया जाये कि इन पर वाहन चलाने पर प्रतिबंध क्यों जारी रखा जाये।

'पहली बार दीपावली का जश्न मनायेंगे अमेरिकी सांसद' यह समाचार देते हुए **'दैनिक जागरण'** लिखता है कि अमेरिकी भारतीयों के एक समूह की पहल पर अमेरिकी संसद पहली बार भारतीयों का प्रसिद्ध त्योहार दीपावली मनायेगी। दीपावली के मौके पर सांसदों ने एक बड़ा आयोजन करने का फैसला किया है। कांग्रेसनल कॉकस ऑन इण्डिया एण्ड इंडियन अमेरिकंस के सह अध्यक्ष और सांसद जो क्राउले ने कहा, दीपावली करोड़ों भारतीयों का प्रमुख त्योहार है। मुझे अमेरिकी सांसदों द्वारा आयोजित किए जा रहे दीपावली के आयोजन का हिस्सा बनकर काफी खुशी हो रही है। मैं काफी उत्साहित हूँ क्योंकि दोनों पार्टियों के नेता आपसी मतभेद भुला कर इसका हिस्सा बन रहे हैं।

'जापान ने भी मानी भारतीय गाय की महत्ता' शीर्षक समाचार **'साप्ताहिक आर्य सन्देश'** (नई दिल्ली) ने प्रकाशित किया है। इसके अनुसार जापान के हिरोशिमा और नागासाकी, जहाँ परमाणु हथियारों के कारण तबाही हुई थी, की भूमि को उपजाऊ करने के लिये भारतीय नस्ल की गौओं का प्रयोग हो रहा है। जापान ने उस भूमि को उपजाऊ करने के लिये कितने ही प्रयोग किये, लेकिन सफलता नहीं मिली। लेकिन भारतीय नस्ल की गौओं के मूत्र, गोबर और दही से तैयार खाद से वहां बेहतर परिणाम सामने आ रहे हैं।

'हृदय रोगों का जनेऊ से निदान' शीर्षक रोचक लघुलेख **'नूतन निष्काम पत्रिका'** (मुंबई) ने प्रकाशित किया है। लेख के अनुसार जनेऊ, यज्ञोपवीत, यज्ञसूत्र अथवा ब्रह्मसूत्र का मानव स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है।...इटली में बारी विश्वविद्यालय के न्यूरोसर्जन प्रो.एनारीका पिरान्जेली ने प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया है कि कान के मूल में चारों तरफ दबाव डालने से हृदय मजबूत होता है। पिरान्जेली ने हिन्दुओं द्वारा कान पर लपेटे गये जनेऊ को हृदय रोगों से बचाने वाली ढाल कहा है।

लन्दन के क्वीन एलिजाबेथ चिल्ड्रेन हासिपटल के डॉ.सक्सेना के अनुसार हिन्दुओं द्वारा मल—मूत्र त्याग के समय कान पर जनेऊ लपेटने का वैज्ञानिक आधार है। ऐसा करने से आंतों की उपकर्षण गति बढ़ती है, जिससे कब्ज दूर होती है तथा मूत्राशय की मांसपेशियों का संकोच वेग के साथ होता है। कान के पास की नसों को जनेऊ से दबाने से बढ़े हुए रक्तचाप को नियंत्रित तथा कष्ट देने वाली श्वास प्रक्रिया को सामान्य किया जा सकता है।

'आर्य मित्र' (लखनऊ) ने 'जीव हत्या जघन्य पाप' शीर्षक से सम्पादकीय लेख प्रकाशित कर बलि प्रथा की निन्दा की है। पत्र लिखता है कि कोई अपनी कामना की पूर्ति के लिये नरबलि या पशुबलि का कुस्सित कार्य करते हैं, तो कुछ कुर्बानी के नाम पर जीवों की हत्या का महापाप करते हैं। अभी बकरीद पर्व पर लाखों निरीह बकरों को मारकर उसके कुर्बानी का नाम दिया गया।...बलि का अर्थ समर्पण है कुर्बानी का अर्थ भी समर्पण ही है। दोनों का अर्थ है, हम कामनापूर्ति हेतु समर्पण भाव से अपने—अपने कर्तव्य का निर्वहन करें। अपने दोषों का त्याग करें।...परमात्मा हमारी कृत हत्या का हमें कठिनतम दण्ड देगा। हम इससे बचें।

www.thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' का अक्टूबर २०१३ का अंक मिला। 'आर्य लोक वार्ता' साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक प्रायः सभी प्रकार के ज्ञानालोक को किसी न किसी रूप प्रसारित करके समस्त मानवता के कल्याण का निर्देश करता रहता है। इसका बहुआयामी स्वरूप निःसन्देह जिस कौशल की अपेक्षा करता है, आप उसका सम्यक् निर्वहन करके उस बहुत बड़े दायित्व का सुन्दर निर्वाह कर रहे हैं, एतदर्थ हार्दिक बधाइयाँ।

इस अंक में स्व.लालबहादुर शास्त्री विषयक संस्मरण लेख बहुत रुचिकर लगा। सर्वथा मौलिक आयाम सम्मुख आया शास्त्री जी के जीवन का जिससे मैं सर्वथा अनवगत था। इसके अतिरिक्त अमृत खरे का 'विनय पीयूष' सचमुच श्लाघ्य है। आपके सम्पाकीय की तो बात ही क्या? ज्ञान और कर्म के द्वन्द्व का विवेचन बहुत गहरे चिन्तन से संपृक्त और यथार्थपरक है। 'वेदांजलि' के अन्तर्गत पं.शिवकुमार शास्त्री जी का मंत्र चयन और विवेचन प्रेरक और प्रभावकारी है। अंक की कविताएँ भी सरस सुन्दर हैं। कुल मिलाकर आपका पत्र आज के वैषम्यपूर्ण जीवन को एक नयी स्वस्थ दिशा-दृष्टि देने में बेजोड़ है। अनेकानेक बधाइयाँ।

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंठ'
वाणी निलय, ७८, त्रिवेणी नगर, लखनऊ

***

वैदिक पत्रिका 'आर्य लोक वार्ता' जैसे ही हाथ में आई मैंने उसे पढ़ना शुरू किया। प्रथम पृष्ठ पर देश के दूसरे प्रधान मंत्री स्व.लालबहादुर शास्त्री जी के विषय में श्री निहाल सिंह आर्य का लेख था। शास्त्री जी मुजफ्फरनगर में पढ़ते थे। उसी क्रम में 'सिसौली' ग्राम के विषय में पढ़ा। सिसौली मेरी जन्मभूमि है तथा श्री बनवारी लाल जी मेरे परदादा थे। लाला लाजपतराय की बहन की शादी मेरे दादा श्री राजाराम के भाई श्री रामचन्द्र सहाय के साथ हुई थी। यद्यपि इस समय लाला लाजपतराय से सम्बन्ध निकालने का कोई औचित्य नहीं है फिर भी एक गर्व की अनुभूति होती है। श्री निहाल सिंह जी ने १०० वर्ष पूर्व के इतिहास की याद दिलाई।

सम्पादक जी की लेखनी का तो कहना ही क्या- हमारी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के कार्यों को इतनी आसानी से समझा दिया। जो लोग सत्यार्थ प्रकाश नहीं पढ़ पाते उनके लिए 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' ही सम्पूर्ण ज्ञान का प्रकाश है। पं. शिवकुमार शास्त्री का 'वेदांजलि' हमेशा की भांति ज्ञानवर्द्धक है। 'काव्यायन' में सभी कवियों की कतितायें सारगर्भित हैं किन्तु उमेश राही की 'सच कह दिया है' दिल को छू लेने वाला है। सब जगह के समाचार इस पत्रिका के द्वारा प्राप्त हो जाते हैं। सच है 'आर्य लोक वार्ता' गागर में सागर के समान ही है। सम्पादक जी को अनेकानेक साधुवाद।

-श्रीमती कमलेश पाल
'योगाश्रम', सेक्टर-सी, अलीगंज, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' अक्टूबर अंक में शास्त्री जी की जयन्ती के अवसर पर श्री निहालसिंह आर्य के आलेख ने आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता और प्रचारक के रूप में महान देशभक्त, निष्ठावान, परम साहसी लालबहादुर शास्त्री के जिस व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित कराया गया वह सचमुच अपूर्व और अनिर्वचनीय है। सुयोग्य प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए उन्होंने 'सादा जीवन उच्च विचार', 'जय जवान जय किसान' उद्घोष के साथ जो आदर्श प्रस्तुत किए, वह सच्चे देशवासी के लिए सदैव अनुकरणीय हैं। देश और विदेश के षडयंत्रकारियों द्वारा उनका प्राण हरण किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जायगा। दो अक्टूबर महात्मा गांधी का भी जन्मदिन है यदि अनका अवदान राष्ट्र के साथ विश्व के लिए है तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के सच्चे अनुयायी शास्त्री जी के सद्कर्मों के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र कृतज्ञ है। उन्हें 'राष्ट्र-संन्यासी' कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। खोजपूर्ण चिन्तन पर आलेख प्रकाशन हेतु आपको अनेकशः धन्यवाद।

ज्ञान और कर्म के समन्वय और सदुपयोग विषयक आपका समसामयिक सन्दर्भ में सम्पादकीय चिन्तन स्तुत्य है। दृष्टान्तों की सटीक विवेचना मन को व्यग्र और सुप्रेरित करती है। 'जिज्ञासा और समाधान' में 'आर्य' शब्द के प्रयोग को वैदिक व्युत्पत्ति द्वारा समझाकर मुझ जैसे की भी जिज्ञासा को शान्त कर दिया है। यह स्तम्भ भी मननीय और नमनीय है। मेरे खण्डकाव्य 'दानवीर भामाशाह' की सार्थक समीक्षा 'अक्षर लोक' में प्रदान की है, एतदर्थ आभार। 'आर्य परिवार परिचय माला' को पुनः स्थान देना स्वागत योग्य है। 'काव्यायन' में राजा भइया गुप्त, सरस, नासिर आदि की रचनाएं महत्त्वपूर्ण एवं हृदयग्राही हैं। कालजयी काव्य स्तम्भ पत्रिका का प्राणतत्व है। कुशल सम्पादन हेतु स्वस्तिवाचन। दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द जी के अवसान पर भावपुष्प अर्पित करते हुए-

स्वामी! भारत माँ दुखी, पुनः व्याप्त अज्ञान।
आर्यों को सद्बुद्धि दो, पढ़ें वेद-विज्ञान।।
जग को आलेकित किया, बुझकर भी ऋषि-दीप।
बनकर आओ स्वातिधन, आतुर है उर-सीप।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
११७, आदिलनगर, रिंगरोड, लखनऊ -२२६०२२

***

आर्य जगत का प्रतिष्ठित पत्र 'आर्य लोक वार्ता' बाराबंकी में भी अनेक स्थानों पर पहुँचता है किन्तु यह बड़े खेद की बात है कि किसी अज्ञात कारणवश, पोस्टमैन महोदय मेरे आवास पर इसे नहीं पहुँचाते हैं, जबकि मैं आर्य लोक वार्ता परिवार का एक सदस्य हूँ और नियमित रूप से मेरे पते पर पत्र भेजा जाता है। डाक विभाग के अधिकारीगण क्या इस क्षेत्र के डाक वितरक को यह निर्देश करने का कष्ट करेंगे कि वह अपने कर्तव्य का पालन करे और 'आर्य लोक वार्ता' मेरे पते पर पहुँचा दिया करे।

संयोगवश आर्यसमाज महावीर गंज (अलीगंज) लखनऊ में मुझे 'आर्य लोक वार्ता' अंक अक्टूबर २०१३ पढ़ने को मिला। पढ़कर मुझे अत्यधिक हर्ष और सन्तोष का अनुभव हुआ। मैं हृदय से प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य, जो लखनऊ के ही नहीं, सम्पूर्ण आर्य जगत के वरेण्य विद्वान हैं, को हार्दिक बधाई दे रहा हूँ।

'शास्त्री-जयन्ती' के उपलक्ष्य में स्व. लालबहादुर शास्त्री के संबन्ध में शोध परक लेखन प्रकाशित कर आपने समाज में नई चेतना और स्फूर्ति उत्पन्न कर दी है। 'आर्य' शब्द को लेकर परम शान्ति दायक समाधान प्रस्तुत किया है, जिसमें पूज्यचरण आचार्य ओजोमित्र शास्त्री की शास्त्रीय विवेचना स्वर्ण में सुगन्धवत है।

'आर्य लोक वार्ता' की वृद्धि और समृद्धि की शत सहस्र कामनाओं के साथ आपका-

-सत्यप्रकाश आर्य भजनोपदेशक
५/६०३, आवास विकास कालोनी, बाराबंकी

***

मैं 'आर्य्य लोक वार्ता' का पाठक हूँ। पिछले १४ महीनों से अस्वस्थ होने के कारण इस पत्रिका पर अपने विचार देने में असमर्थ रहा। अभी अक्टूबर मास के 'आर्य्य लोक वार्ता' का पूरा अवलोकन किया। स्वभाव से इस पत्रिका का एक-एक शब्द पढ़ता हूँ ताकि हमारी वेद सम्बन्धी ज्ञान और आस्था पुष्ट हो। इस बार मुख्य पृष्ठ पर निहाल सिंह आर्य ने हमारे प्रिय नेता श्री लालबहादुर शास्त्री जी की जीवनी पर प्रकाश डाला, जिसे पढ़कर मैं दंग रह गया कि ये कभी आर्य समाज से भी जुड़े रहे। इनका राजनीतिक जीवन हम सब प्रायः जानते हैं कि वह कितने स्वच्छ और महान प्रधानमंत्री थे। उनकी पारिवारिक जीवनी से और अधिक जानकारी बढ़ी। हम इस लेख के लिए स्व.निहाल सिंह आर्य व आपके आभारी हैं।

यूँ तो सारा आ.लो.वा. ज्ञानवर्द्धक है पर आपका सम्पादकीय 'ज्ञान और कर्म-द्वन्द्व' बहुत प्यारा लगा। जिस में जो जो उदाहरण आपने दिये हैं उसका कोई सानी नहीं। हमारे दिल को छू गई। इस सब को अपने हृदय पटल पर नोट करना पड़ा। पं.शिव कुमार शास्त्री की वेदमंत्र की व्याख्या गागर में सागर है। हम उनके हर बार मंत्रों को पढ़कर तृप्त हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि वेदमार्ग जो हमने अपनाया है उसकी कोई काट नहीं। 'काव्यायन' एवं 'मनुष्य का विराट रूप' से हमारी सारी प्यास बुझ जाती है। अंत में आपको हृदय से धन्यवाद देता हूँ, जिनके अथक प्रयास से आर्य लोक वार्ता हमें इस रूप में प्राप्त हो रहा है और होता रहेगा।

-मदन मोहन जोशी
११७, पटेल नगर, आलमबाग, लखनऊ

***

चिरप्रतीक्षित 'आर्य लोक वार्ता' वर्ष १६ अंक४ कल प्राप्त हुआ। मैं आपके सम्पादकीय की मुक्तकंठ से प्रशंसा करता हूँ। सारांश में आपकी तरह लिख पाने की कला आपके मुझ 'हर्ष' को भी प्राप्त हो, ऐसी इच्छा आपसे सदैव अभीष्ट है। 'आर्य्य' शब्द के सम्बन्ध में 'जिज्ञासा और समाधान' उच्चकोटि का है। 'आर्य' शब्द को लेकर जो समाधान आप-द्वय (आचार्य ओजोमित्र शास्त्री तथा डॉ.वेद प्रकाश आर्य) से पढ़ने में आया, ऐसा बिरले ही मिलता है। एतदर्थ, आप दोनों को हार्दिक बधाई!

काजल की कोठरी में जाकर कौन बगैर लीक के रह पाया है और जब पहले से ही कोई काजल की कोठरी में गलत इरादे से हो फिर उसका नवल धवल रह पाने का सवाल ही नहीं है। नितान्त सुरक्षित और संरक्षित एकान्त कभी भी व्यक्ति को डांवाडोल करने में सक्षम होता है। कुमति के आगे ज्ञान और कर्म का तालमेल कब बैठ पाया है? अस्तु, जो होना है, सो फिर होना ही है। 'कोई क्या कर लेगा' जब ऐसे विचार हावी हों तो फिर भ्रष्टाचार को देर कहाँ? 'आसूमल' से 'आसाराम' बने अपने कुकृत्य से आसूमल से नीचे आ गये हैं। कठोर प्रायाश्चित्त के अलावा कोई रास्ता नहीं है। दूषित आहार विहार के आगे 'संयम खलुजीवनम्' वृथा है। आपके सम्पादकीय के प्रति पुनः आभार।

-बाँके बिहारी 'हर्ष'
अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

***

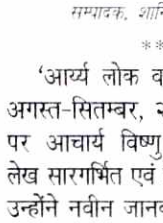

'आर्य लोक वार्ता' का समुन्नत स्तर तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रति इसकी अकाट्य निष्ठा को देखकर मुझे अपार प्रसन्नता होती है। मैं अक्सर बार बार इसका पाठ करता हूँ। मेरे ज्ञान और संज्ञान में वृद्धि होती है।

'वैदिक संध्या' के बारे में आपके सम्पादकीय संग्रहणीय हैं। मैंने इस तरह का सारगर्भित संध्योपासना का विवेचन अन्यत्र नहीं देखा। हमारी आर्य समाज में हमेशा 'संध्या' का विधिवत अभ्यास कराया जा रहा है। श्री अमृत खरे द्वारा लिखित सभी स्तंभ शोधपूर्ण तथा आकर्षक शैली में लिखे जाते हैं। उनका काव्यानुवाद हो, अथवा 'वाचनालय से' या 'अक्षर लोक' हो, सभी कुछ लाजवाब होता है। 'काव्यायन' की कविताएँ केवल पढ़ने के लिए ही नहीं अपितु स्मरणीय होती हैं। समाचारों का संकलन एवं सम्पादन उच्चस्तरीय होता है। निःसन्देह 'आर्य लोक वार्ता' लखनऊ का गौरव है। सभी आर्य समाजों से इस पत्र का अधिकाधिक प्रचार तथा क्रियात्मक सहयोग करने के लिए मैं अपील करता हूँ।

-जगदीश खत्री
प्रधान, आर्य समाज चन्द्रनगर, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' के अंक नियमित मिल रहे हैं। उत्तम योजना है। आर्य लोक वार्ता में मौलिकता है। 'वाचनालय से' एक उपयोगी स्तम्भ है। कविताओं का चयन सुन्दर है। पुराने महारथियों में पं.रामचन्द्र देहलवी के लेख प्रकाशित कर आप अच्छा कार्य कर रहे हैं। 'शान्ति धर्मी' में भी पं.देहलवी की एक लम्बी लेखमाला निकली है।

-चन्द्रभानु
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द, हरियाणा

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के संयुक्तांक अगस्त-सितम्बर, २०१३ के मुख पृष्ठ पर आचार्य विष्णु प्रभाकर जी का लेख सारगर्भित एवं ज्ञानवर्धक है जिसमें उन्होंने नवीन जानकारी दी है कि युग द्रष्टा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने १९वीं शताब्दी में ही समझ लिया था कि हिन्दी ही देश की राजभाषा होगी और इसीलिए उसके प्रचार-प्रसार एवं उसे राजभाषा का दर्जा दिलाने के निमित्त वह भरसक प्रयासरत रहे।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वामी दयानन्द जी का हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थापित कराने में उल्लेखनीय योगदान रहा। अब देखना यह है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा कब घोषित होती है?

श्री आनन्दकुमार जी के धारावाहिक (३६) 'मनुष्य का विराट रूप' में वर्णित पौराणिक कथा आद्योपांत पढ़ गया। रोचक लगी। 'काव्यायन' के अन्तर्गत अनेक रचनाएँ भी मनभावन हैं।

-डा. मिर्ज़ा हसन नासिर
जी-०२, लोरपुररेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

हमारे पूज्य नानाजी पं.देवदत्त त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य संस्कृत के विद्वान थे। वैदिक धर्म ही उनका धर्म था। सत्य, अहिंसा, दया ही उनके मूलमंत्र थे। यज्ञ, हवन संध्योपासना ही उनके विषय थे। उनके श्लोक सुनते सुनते हमें सब याद हो गये थे। वह एक युग पुरुष थे। उनके चले जाने के बाद जैसे सतयुग चला गया हो और कलयुग का प्रारम्भ हुआ हो।

हमारी नानी दया, ममता की मूर्ति थीं, दीनों पर कृपा करती थीं, दुखियों को देख कर दुःखी हो जाती थीं। दरवाजे से याचक सन्तुष्ट होकर जाता था। वे मदर टेरेसा की भांति थीं, उनका नाम सुखरानी था। दूसरों को सुख देकर दूसरों का दुःख स्वयं ले लेती थीं। हमसे बहुत स्नेह करती थीं। उनकी स्मृति आज भी मन को द्रवित करती है, उन्हें श्रद्धा से नमन करता हूँ।

-जय प्रकाश शुक्ल
आशियाना कालोनी, आलमबाग, लखनऊ

***

स्वामी आत्मबोध सरस्वती विद्वान थे। आर्य समाज के मूर्धन्य नेता थे। निःसन्देह सत्य है। मैं अक्सर हरिद्वार जाता रहता हूँ क्योंकि मेरी बेटी वहीं है और उसका निवास स्थान भी ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम के पास ही है। उनका लगभग सभी से परिचय है और सबसे बड़ी बात यह है कि मेरे दामाद का नाम भी डॉ.वेद प्रकाश आर्य ही है। प्रारम्भ में जब आपसे परिचित नहीं था तो एक दो बार आपका लेख पढ़ा तो मैंने सोचा मेरा दामाद लेख आदि तो लिखता नहीं है तो यहां ये डा.वेद प्रकाश आर्य कौन हैं जिनके लेख अखबार में आते हैं? धीरे धीरे आपसे परिचय हुआ जाना कि आप हैं। आप वास्तव में एक ही हैं जो 'आर्य' नाम को सार्थक कर रहे हैं।

मैंने पिछले साल अपने वार्षिकोत्सव में घोषणा की थी कि सभी लोग अपने नाम के आगे आर्य अवश्य लगायें। यदि आर्य समाजी अपने नाम के आगे आर्य लगायेंगे तो आर्य ही आर्य दिखाई देंगे। पंजाबी अधिकतर आर्य समाजी हैं परन्तु कोई भी आर्य नहीं लगाता। मैं तो समझता हूँ कि आर्य लगाने में हीनता का नहीं गर्व का अनुभव करना चाहिए।

-नरदेव आर्य
प्रधान, आर्यसमाज, मानसरोवर, लखनऊ

www.thearyasamaj.org

धारावाहिक-(38)

मनुष्य का विराट् रूप

-श्रीआनन्दकुमार-

कितने ही ऐसे हैं जो जाति-कुल या किसी स्वजन के बड़प्पन का लाभ लेकर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहते हैं। 'हँसिके लोढ़ा करै लड़ाई। हम संभुनाथ के भाई।'- यह कहावत ऐसे ही लोगों के लिए है। दूसरों के बल पर गर्व करने वाले को कोई बलवान् नहीं मानता। उधार लेकर काम चलाने वाला सम्पन्न नहीं माना जाता। पत्थर का टुकड़ा यह कहकर किसी का रास्ता नहीं रोक सकता कि हम हिमालय के भतीजे हैं। उसे लोग तोड़ डालेंगे या फेंक देंगे। मिथ्या प्रदर्शन, ऊपरी ठाठ-बाठ का वही परिणाम होता है जो इस कहावत में वर्णित है- 'होने चले बाबू भइया, हो गये भिखारी।' मिथ्या व्यक्तित्व टिकाऊ नहीं होता।

इस समय ऐसे आदमियों की कमी नहीं है जो अवसर का लाभ लेकर, दूसरों की आँखों में धूल झोंककर, अनधिकार चेष्टा से अधिकारी बन बैठते हैं; परन्तु हम देखते हैं कि उनकी सत्ता-महत्ता अस्थायी होती है। बिहारी के शब्दों में हम ऐसे लोगों का अस्थिर वैभव देखकर यह सकते हैं-

दिन दस आदर पाय के, करिले आपु बखान।
लो लौं काग सराध-पख, तो लौं तो सनमान।।

अयोग्य और कर्त्तव्य-च्युत प्राणी अन्त में अधिकार-च्युत हो ही जाता है। कुर्सी की पीठ अपनी पीठ नहीं हो सकती।

कुछ लोग अनुचित बल-प्रयोग से अधिकारी बनने का प्रयत्न करते हैं और बन भी जाते हैं। ऐसे लोगों का पराभव ही देखा जाता है। स्वामी रामतीर्थ ने आपने एक भाषण में कहा था-"That which is forced is never forcible."

अर्थात्, इसका तात्पर्य यह है कि अत्याचार प्रभावशाली नहीं होता। लोकदृष्टि में, दूसरों को बलपूर्वक दबा रखने वाला अधिकारी नहीं, अत्याचारी माना जाता है। ऐसे व्यक्ति का उत्थान लोक-प्रकृति को असह्य है-"गुणः खल्वनुरागस्य कारणं न बलात्कारः।" प्रसिद्ध योद्धा नेपोलियन ने भी स्वीकार किया है कि पशुबल पर सदाचार की सर्वत्र विजय होती है-"In all places brute force yields to moral qualities."

इस प्रसंग में उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि अकबर का यह शेर उल्लेखनीय है-

जो ख़िरदमन्द हैं वह ख़ूब समझते हैं यह बात।
ख़ैर-तबाही वह नहीं है जो हो डर से पैदा।।

दूसरों को डरा-धमकाकर या पैरों तले रौंदकर अनुचित रीति से कोई बड़प्पन नहीं पा सकता। बड़प्पन दूसरों को नीचा दिखाने से नहीं मिलता। मनुष्य को स्वयं इतना ऊँचा उठना चाहिए कि दूसरे उसके आगे छोटे लगें। सूर्य तारों को या घर के दीपकों को नहीं बुझाता। उसके तेज से वे स्वयं हतप्रभ हो जाते हैं। नेपोलियन ने एक बार कहा था कि मेरी प्रधानता का आधार यह था कि मैंने अपने को सेना के अन्य किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा श्रेष्ठ प्रमाणित किया था; यदि मैं मानवीय दुर्बलताओं के आगे झुक जाता तो मेरा अधिकार-बल नष्ट हो जाता।

महत्त्वाकांक्षी व्यक्तियों को कैनिंग का यह वाक्य सदैव स्मरण रखना चाहिए-"My road must be through character to power." अर्थात्, अधिकार-प्राप्ति के लिए हमें सदाचार के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। लोक धर्म की उपेक्षा करके कोई शक्ति-सम्पन्न नहीं बन सकता। यथाधर्म अपना कर्त्तव्य करते हुए मनुष्य अपने अधिकारों की रक्षा में समर्थ होता है। उपनिषद् का मत है कि धर्म करके ही निर्बल व्यक्ति बलवान् को जीतने की इच्छा करता है-'अबलीयान् बलीयांस माशंसते धर्मेण।' जो नागरिक के अधिकार चाहता है, उसे उचित है कि वह अपने चरित्र से नागरिकता प्रकट करे; स्वार्थ के ऊपर कर्त्तव्य को महत्त्व दे। जो अपनी पत्नी की दृष्टि में पतिदेव बनना चाहता है, उसके गुण-कर्म में देवतापन होना आवश्यक है। दानवता या पशुता से देवत्व कैसे मिलेगा? जो कुलपति के अधिकार चाहता है, उसे कुल-कुली बनकर घर का सारा बोझ उठाना चाहिए, सबका पालन-पोषण करना चाहिए, क्योंकि शास्त्र के कथनानुसार मनुष्य अपने स्त्री-बच्चों और सेवकों का ऋणी उत्पन्न होता है; उसके ऋण को चुकाना उसका धर्म है। जो लोक-हृदय पर अधिकार चाहता है उसे महात्मा बुद्ध का यह वचन याद रखना चाहिए कि श्रद्धावान्, शीलवान्, यश और भोग से युक्त पुरुष जहाँ-जहाँ जाता है, वहीं-वहीं पूजित होता है। इसी प्रकार अन्य अधिकारों के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए।

प्रायः यह देखने को मिलता है कि अच्छे-अच्छे गुणवानों, विद्वानों को भी कोई नहीं पूछता। इसका रहस्य कौटिल्य के शब्दों में यह है-'अल्पसारं श्रुतवन्तमपि न बहु मन्यते लोकः।' अर्थात् शास्त्रज्ञ यदि शक्तिहीन है तो लोक उसका आदर नहीं करता। सुयोग्य बनकर बैठने से किसी की महिमा नहीं बढ़ती। विद्या बुद्धि के साथ प्रगल्भता, सक्रियता चाहिए। तभी कर्त्तव्य की पूर्ति हो सकती है। थोड़ा-बहुत कर्त्तव्य करके कोई पूरा लाभ कैसे पायेगा? इस सम्बन्ध में विख्यात विलायती विद्वान् कार्लाइल का यह कथन ध्यान में रखने योग्य है-"Men do less than they ought unless they do all that they can." इसका सरल अर्थ यह है कि लोग जबतक उतना काम नहीं करते जितना कि वे कर सकते हैं, तबतक वे कम ही करते हैं।

अपना कर्त्तव्य कीजिये

अपने लिए और देश, समाज के कल्याण के लए यह आवश्यक है कि लोग स्वार्थपूर्ण अधिकार-मोह त्यागकर यथाशक्ति अपना-अपना कर्त्तव्य करें। चीन के प्राचीन दार्शनिक कनफ्यूशस ने कहा है कि उत्तम राज्य वही है जहाँ शासक शासक, मंत्री मंत्री, पिता पिता और पुत्र पुत्र हों; सब अपने कर्त्तव्य को समझकर उसके अनुसार आचरण करें। मर्यादा का अतिक्रमण अपने ही लिए हानिकर होता है। जो स्वयं अपने आचरण को मर्यादित नहीं कर सकता, वह दूसरों को अनुशासन में कैसे रखेगा? इसलिए आत्मशासन को स्वाधिकार प्रथम सोपान मानना चाहिए। आत्मशासन सहज नहीं है। प्रायः लोग थोड़ा-सा अधिकार पाते ही आपे से बाहर हो जाते हैं, शक्ति के उन्माद में अपना कर्त्तव्य भूल जाते हैं। नीतिज्ञ शुक्राचार्य ने कहा है-'स्वभाव सद्गुणे यस्मान्महाऽनर्थमदावहा।' -स्वभाव से सद्गुणी महा अनर्थमद उत्पन्न करती है। और अधिकार मद को चिरकाल तक पीकर कौन नहीं मोहित होता!- "अधिकारमदं पीत्वा को न मुह्यात्पुनश्चिरम्।"(शुक्रनीति)। अधिकार पाते ही बहुत से भले आदमी भी सचमुच धिक्कार के योग्य हो जाते हैं, अकर्त्तव्य कर्म करने लगते हैं। सिर में गर्मी बढ़ने से आँचर के आगे अँधेरा हो ही जाता है। इस स्वाभाविक दुर्बलता को ध्यान में रखकर, श्रीमद्भागवत के अनुसार, विधाता ने भगवान् से पहले ही यह वरदान मांग लिया था कि निश्चिन्त होकर आपकी सेवा में तत्पर रहते हुए मेरा अपने को स्वतंत्र एवं अजन्मा मानकर मद न बढ़ जाय-

अविक्लवस्ते परिकर्मणि स्थितो,
मा मे समुन्नद्धमदोऽजमानिनः।।

प्रत्येक व्यक्ति को इसी प्रकार सावधान होकर निरन्तर अपने कर्त्तव्य का ध्यान रखना चाहिए। तभी वह स्वतंत्रतापूर्वक अपने अधिकारों का उपभोग करता हुआ आत्मोन्नति कर सकता है। व्यक्तिगत योग्यता के बिना जन्मगत अथवा राजनीतिक अधिकार निरर्थक है। सत्कर्महीन मनुष्य को तो साधारण मनुष्यता का अधिकार भी नहीं मिलता।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

रानी लक्ष्मीबाई के जन्मदिवस (७नवम्बर) पर विशेष

भारतीय इतिहास का एक अमर पृष्ठ

जब राज्य हड़पने का पत्र झाँसी पहुँचा

मालकम के पास डलहौजी की आज्ञा आ गई और उसने बिना विलंब नीचे लिखा हुआ इश्तिहार एलिस के पास भेज दिया-

"दत्तक को गवर्नर जनरल ने नामंजूर किया है। इसलिए भारत सरकार की ७ मार्च, १८५४ की आज्ञा के अनुसार झाँसी का राज्य ब्रिटिश इलाके में मिलाया जाता है। इश्तिहार के जरिए सब लोगों को सूचना दी जाती है कि संप्रति झाँसी प्रदेश का शासन मेजर एलिस के अधीन किया जाता है। इस प्रदेश की सब प्रजा को अपने ब्रिटिश सरकार के अधीन समझे और मेजर एलिस को कर दिया करे और सुख तथा संतोष के साथ जीवन निर्वाह करे। १३.०३.१८५४ ह.मालकम।"

प्रजा का सुख संतोष! उसका कल्याण!! राजनीति के पाखंड को कैसे बढ़िया मुहाविरे मिले!!!

मालकम ने इस घोषणा को बहुत लुका-छिपाकर एलिस के पास भेजा और उसको हिदायत दी कि बहुत सावधानी के साथ काम किया जाए, क्योंकि उसे मालूम था रानी जनप्रिय हैं, कहीं झाँसी की जनता दंगा-फसाद न कर बैठे। इसलिए एलिस ने सेना द्वारा झाँसी का कठोर प्रबंध किया।

एलिस ने होशियारी के साथ उस घोषणा को एक जेब में रखा और दूसरी में पिस्तौल। सशस्त्र अंगरक्षकों को साथ लेकर रानी के पास किलेवाले महल में पहुँचा। रानी को सूचना दे दी गई थी कि छोटे साहब के पास बड़े लाट साहब की आज्ञा आ गई है, उसी को सुनाने आ रहे हैं। मोरोपंत इत्यादि बहुत दिन से आशा लगाए बैठे थे। दीवाने-खास में नियुक्त समय पर आ गए। रानी परदे के पीछे बैठीं। दीवाने-खास में एक ऊँची कुरसी पर दामोदरराव।

एलिस दृढ, पर अदृढ़ हृदय के साथ दीवाने-खास में प्रविष्ट हुआ। मोरोपंत इत्यादि ने बहुत विनीत भाव के साथ अभिवादन किया। दीवाने-खास में इत्र-पान इत्यादि सजे-सजाए रखे थे। बुर्जों पर तोपों में सलामी दागने के लिए बारूद डाल दी गई थी। एलिस होंठ-से-होंठ सटाये आया और अपने माथे की शिकनों को समेटकर अभिवादन का उत्तर देता हुआ बैठ गया।

मोरोपंत ने विनीत भाव से साथ कहा, 'साहब, आपको यहाँ तक आने में बहुत कष्ट हुआ होगा।'

मुश्किल से एलिस का कंठ मुखरित हुआ, 'मेरा कर्तव्य है। दुखदायक कर्तव्य है।'

सब लोग सन्नाटे में आ गए। एलिस ने कहा, 'महारानी साहब आ गई हैं?'

दीवान ने उत्तर दिया, 'जी साहब, परदे के पीछे विराजमान हैं।'

एलिस ने जेब से मालकम वाली घोषणा निकाली। दरबारियोंके कलेजे धक् धक् करने लगे।

कलेजा थामकर उन लोगों ने घोषणा को सुन लिया। गुलाम गौसखाँ तोपची अनुकूल घोषणा की आशा से दीवाने खासे के एक दर के पीछे की तरफ कान लगाए खड़ा था। प्रतिकूल घोषणा को सुन मुँह लटकाये चुपचाप चला गया।

जब घोषणा पढ़ी जा चुकी- मोरोपंत के मुँह से निकला, 'ओफ!'

दीवान के मुँह से, 'हाय!'

और दरबारियों के मुँह से, 'अनहोनी हुई'। दामोदरराव समझने की कोशिश कर रहा था, उसको आभास मिल गया कि कुछ बुरा हुआ है।

यकायक ऊँचे, परंतु मधुर स्वर में रानी ने परदे के पीछे से कहा, 'मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।'

इन शब्दों से दीवाने-खास गूँज गया। वायुमंडल ने उनको अपने भीतर निहित कर लिया।

भारत के इतिहास में वे शब्द दिए गए। झाँसी की कलगी में वे शब्द-मुक्ता बनकर चिपक गए।

(हिन्दी साहित्य के गौरव स्व.वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यास 'झाँसी की रानी' से साभार)

'आर्य्य लोक वार्ता' की विशेषताएँ

-आचार्य पं. ओजोमित्र शास्त्री

किसी पत्रिका या पत्र के जीवन यात्रा की अवधि, चिरस्थायिता, प्रचार प्रसार के लिए सम्पादक की योग्यता प्रथम कारण रूप में समझी जाती है। इस दृष्टि से इस पत्रिका को ऐसे विद्वान्, विवेकी, उदात्त विचारक संपादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य का प्राप्त होना, पत्रिका का सौभाग्य मानना चाहिए। आर्य लोक वार्ता के सम्पादकीय लेख संग्रहणीय होते हैं जिनकी उपयोगिता सर्वकालीन उपयोगी मानी जा सकती है। जो इतिहास के साथ आधुनिक परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए भविष्यत् की उन्नति के निर्देश, आदेश, उपदेश, अवधान, विधान प्रक्रिया द्वारा किसी भी समाज को सुपथ पर चलने को बाध्य करते हैं।

इस पत्र की यह भी विशेषता है कि प्राचीन महापुरुषों के साथ आधुनिक सामाजिक लेखकों, कहानीकारों, उपन्यास कारों की स्मृतियाँ आर्य समाज संस्था से जोड़कर आधुनिक आर्य समाज के सदस्यों के हृदय में, स्वाभिमान, उत्साह, प्रगति के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। जैसे विगत वर्ष में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के विषय में दो विद्वानों द्वारा उपन्यास सम्राट का आर्य समाज से सहानुभूति ही नहीं आर्य समाज का कर्मठ कार्यकर्त्ता के रूप में वर्णन प्रस्तुत किया गया था। श्री प्रेमचंद जी आर्य समाज हमीरपुर के सदस्य ही नहीं अपितु उसके उत्सवों में विद्वानों की व्यवस्था भी करते थे। जिनमें हिन्दू विश्वविद्यालय के अरबी फारसी के प्रोफेसर श्री मौलवी महेश से अधिक प्रभावित थे। उस लेख में शुद्धि के लिए प्रयत्न करते हुए कहानी भी लिखी थी, जिसका शीर्षक था "खून पानी हो गया" जिसका भाव था- नवयुवक द्वारा मुस्लिम कन्या से विवाह करने पर आर्यसमाज हमीरपुर द्वारा प्रेरित करने पर भी ब्राह्मणों द्वारा स्वीकार न करना था।

इस वर्ष छत्रपति शिवाजी के यज्ञोपवीत संस्कार में कठिनाइयों, विरोध का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए यह दर्शाया है- जो व्यक्ति हिन्दू साम्राज्य की स्थापना के लिए मुगल सम्राट औरंगजेब से लोहा ले रहा हो- उसको यज्ञोपवीत कराने में कितना परेशान किया गया। जिसके व्यय में शिवाजी का कोष ही समाप्त हो गया था। किन्तु स्वामी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश ने इस यज्ञोपवीत का सरलीकरण करके प्रत्येक सुधारवादी मानव के लिए सहज कार्य बना दिया। जिसके कारण आज दलित जाति के लोग भी यज्ञोपवीत धारण कर पौरोहित्य कर रहे हैं। श्री चिन्तामणि शास्त्री दिल्ली आर्य समाजों में श्रेष्ठ पुरोहित माने जाते हैं। यह सब स्वामी जी द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' की कृपा है। यह विचार भी डा.रामप्रकाश जी के लेख से स्पष्ट होता है।

अक्टूबर २०१३ के अंक में श्री निहाल सिंह जी ओम-सुधा नामक प्रमाणित पत्रिका के आधार पर भारत के आदर्श प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री को आर्य समाज के अछूतोद्धार कार्य संचालन के लिए उपदेशक नियुक्त किया गया था। श्री लालबहादुर शास्त्री जी को अछूतों को यज्ञोपवीत पहनाने का कार्य भी सौंपा गया था। यज्ञोपवीत धारण करा कर, बीड़ी सिगरेट, शराब आदि से छुटकारा दिलाना आर्य समाज द्वारा यज्ञोपवीत धारण कराने का मुख्य उद्देश्य था। श्री राजाराम मोहनराय द्वारा संचालित 'प्रार्थना समाज' का मुख्य नियम था कि जाति पाति प्रदर्शक यज्ञोपवीत त्याग कर ही प्रार्थना समाज का सदस्य बन सकता था। किन्तु आर्य समाज का उद्देश्य था जीवन को उत्तम बनाने के लिए यज्ञोपवीत प्रतिज्ञा के रूप में धारण करना आवश्यक है।

उपर्युक्त बातें आर्य समाज को जीवन दान देने वाली हैं। अतः डॉ.वेद प्रकाश जी कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं। तथा पत्रिका में श्री अमृत खरे जी द्वारा नीरस से लगने वाले मंत्रों का सरस पद्य अनुवाद हृदय को आनन्द और शान्ति प्रदान करता है। सम्भव है कि खरे साहब को यह शक्ति मंत्र द्रष्टा के रूप में ईश्वर प्रदत्त प्राप्त है। उनके पद्य पत्रिका के परम सौभाग्य के सूचक हैं। पत्रिका को उनका सहयोग चिरकाल तक प्राप्त होता रहे, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

(दिनांक १४.११.२०१३, आर्य समाज, महावीरगंज, अलीगंज, लखनऊ)

www.thearyasamaj.org

काव्यायन

धर्मरथी

❑उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंठ'

'सत्य' शुभ–धर्ममूल, धर्म–शिरोभूषण है,
शुचि–मृदु–रुचिर–गँभीर बोल बोलना।
विमल–वचन एकरस बोलना सदैव,
वंचना–प्रपंच की बयार से न डोलना।
सरल–अमल आचरण खन–वृत्ति–हीन,
लाभ–लालसा के कभी द्वार नहीं खोलना।
दान–इष्ट–हवन तपस्वी तप–वेद–मूल,
सत्य सदा सर्वोपरि मोल नहीं मोलना।।

'परहित' निज–स्वार्थ–त्याग करना परार्थ,
हानि की न परवाह कर कष्ट झेलना।
लेकर उमंग की तरंग परकाराज की,
दूसरों के दुःख की शिलाओं को ढकेलना।
निबल–निरीह–आँसुओं की पीर–अनुमान,
शुष्क–म्लान–मनों पर स्नेह–वारि मेलना।
उपकार विरला है धर्म का किरीट–रत्न,
धन्य है परार्थ निज प्राणों पर खेलना।।

–'वाणी निलय', 538क/88, त्रिवेणी नगर प्रथम, सीतापुर रोड, लखनऊ

वह भी मनुष्य है

❑डॉ. कैलाश निगम

पाँव में फटी बिवाई भूख उसे खींच लाई,
जेठ की दुपहरी में करता कमाई है।
पूस, माघ की निशा ठिठुरता है अर्धनग्न
शेष कितनों के पास सुख की रजाई है।
ऋण–आग में जला है ये अभावों में पला है,
इसके पसीने ने ही फसल उगाई है।
यह भी स्वतंत्र है, परन्तु भूखा मरने को,
महलों को भी सँवारता श्रमिक भाई है।

दुबक गया है सारा शहर रजाइयों में,
वहीं फुटपाथ पड़ा चीथड़ों में सोता है।
काँपती है देह, दाँत बजते हैं बार–बार,
वह भी मनुष्य है जो भार यह ढोता है।
पौष और माघ के महीने इतने हैं ढीट,
वही टिकता है जो कि धैर्य नहीं खोता है।
कभी कोहरा तो कभी शिशिर की वायु चले,
कभी – कभी उसपे तुषार पात होता है।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

'राही' के मुक्तक

❑उमेश 'राही'

जिनको मैंने ही समझा वह टुकड़े कांच के निकले,
दुश्मनों को मैंने खोजा तो वह अपने साथ के निकले।
वो सिर्फ पत्थर थे जिनको हमने विश्वास से पूजा कभी–
सीने से लगाए रखा जिनको, वो वंशज सांप के निकले!!

किसी को गलत कहने से पहले स्वयं को आंककर देखो,
किसी को नीचा दिखलाने से पहले असलियत जानकर देखो।
तुम किस हैसियत से पत्थर चलाओगे कांच के घर में रहने वाले–
तुम्हार मुखालिफ लोग कितने हैं, तुम दीवार झांककर देखो!!

–'कला–सदन', 363ए/4, मोती नगर, लखनऊ

बेटियाँ

❑डॉ. मिर्ज़ा हसन 'नासिर'

घर की शोभा बनें बेटियाँ,
फूल बनके खिलें बेटियाँ।

मुस्कुराती है मोनालिसा,
जिस जगह भी बसें बेटियाँ।

शदियों का भी मौसम रहे,
दुल्हनें भी बनें बेटियाँ।

अब न दुल्हन कोई भी जले,
पी के घर खुश रहें बेटियाँ।

महफिलें नित्य सजती रहें,
जगमगाती फिरें बेटियाँ।

'दामिनी' अब न कोई बुझे,
यामिनी में हँसे बेटियाँ।

आओ! मिलकर बचायें इन्हें,
गर्भ में क्यों मरें बेटियाँ।

फूल 'नासिर' के घर भी खिलें,
आके कुछ दिन रहें बेटियाँ।

–जी–02, लोकपुर रेज़ीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

दयानन्द-जयगान

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

दयानन्द स्वामी का जयगान हम करें।
वेदों वाले ऋषि का सम्मान हम करें।।
अनय–भ्रष्टाचार की है छा गयी निशा,
दीन–हीन निर्बल की है दुर्दशा,
सरे आम नारियों का अपमान है,
जातिवाद, दम्भ, द्वेष, व्याप्त हर दिशा।
सत्य के प्रकाश से विहान हम करें।।
बाबा, संत, धर्म–व्यवसाय कर रहे,
दमित–समाज़, असहाय कर रहे,
मन्दिर ही अब 'स्विस बैंक' बन गए,
देवी–देवता को 'हॅलो–हाय' कह रहे।
सर्वव्याप्त 'ओम्' का भान हम करें।।
स्वप्न फलीभूत करें दयानन्द का,
दूर हो कुहासा, झूठ–छल–छंद का।
आर्य बनें आचरण–संस्कार से,
द्वार खुले स्नेह–शान्ति–आनन्द का,
ऊर्ध्वगामी ज्ञान–विज्ञान हम करें।।
वेदों वाले ऋषि का सम्मान हम करें।।

–117, आदिलनगर, लखनऊ–22

हर्ष–चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

जान रहते 'हर्ष' नहीं बचता कोई सामान है।
अमानत में खयानत की नजर के वास्ते ईमान है।
किस तरह महरूम हम अपनों की करनी से हुए–
लफ्ज कहने के लिए मिलना नहीं आसान है।

व्यर्थ है लेखन सभी कुछ, व्यर्थ हैं सपने,
भले क्षण–क्षण लगूँ माला, तुम्हारे नाम की जपने,
हाल सुन तसलीम को, है इल्तजा इतनी–
पूरी कतई होगी नही, है वक्त कब हाथ में अपने।।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

महर्षि दयानन्द निर्वाण पर्व पर विशेष

दीपक दिवाली का...

❑महाकवि श्री अनूप शर्मा

प्रगट हुआ जो भारतीय महि मण्डल में,
जीवन प्रभात पाके अंश अंशुमाली का।
खो गया महान अंधकार वसुधा को चीर,
हो गया सुकाल–काल कठिन कुचाली का।
पाई पोप राहु ने सुबाहु के समान गति,
देश बद्ध वैभव सुधर्म शक्तिशाली का।
वृद्धि हुई ऐसी कि महान् तेज पुंज हुआ,
प्रबल प्रताप भानु दीपक दिवाली का।।

भूमि दुराचार भार भारती महान् हुई,
आर्य थे असंग संज्ञा मन्त्र की सिपारा थी।
ईश हुए ईसा मंत्र बीसा के कुसाधकों के,
पाती आर्य सभ्यता न कोई भी सहारा थी।
ऐसा काल जान के उधारने को भूमि भार,
धायी वसुधा में शक्ति करके अपारा थी।
देव–धुनि धारा सी तुरन्त गिरी भूतल पै,
देव दयानन्द की अभेद वेद धारा थी।।

जाता जिस ओर था मचाता क्रान्ति भारत में,
मचता अनूप उसी ओर हाहाकार था।
जीते जी उसी के एकमात्र आर्यविश्व बीच,
धर्म था सनाथ जो अधर्म निराधार था।
डूब डूब पाते भूरि भक्त जिस में थे मुक्ति,
अगम असीम तेरा पुण्य पारा वार था।
वीरता का विभुता का गुरुता गम्भीरता का,
समता क्षमा का दयानन्द अवतार था।।

जिसने विधर्मियों की धज्जियाँ उड़ाई और,
जिसने स्वदेश की कुरीतियाँ है बन्द की।
वेद को उबारा जाति नींव को सुधारा ध्रुव,
धैर्य से 'अनूप' धर्म–ध्वजा है बुलन्द की।
बाल ब्रह्मचारी पूर्ण पण्डित पुनीत वही,
धर्म धीरता को दुनिया में है दुचन्द की।
सतत रहेगी फहराती भूमि भारत में,
विजय पताका धर्म वीर दयानन्द की।

गोनी ग्राम की गौरव गरिमा

माता सुखरानी

❑गमा आर्य 'गमा'

जीवन सीधा सादा, वह उच्च विचारों वाली,
संस्कार संस्कृति की, करती जो रखवाली।
ज्ञान ध्यान चिन्तन में, रामायण गीता थी,
धर्म परायणता में, अनुसुइया सीता थी।
परोपकार के सम है, धर्म न कोई दूजा,
वेद ज्ञान की गंगा, सत्य कर्म है पूजा।
नहीं कभी द्वारे से, लौटा मंगन खाली,
भूखी ही रह जाती, देकर अपनी थाली।
एक वस्त्र से तन को, ढक कर काम चलाती,
किन्तु परायी पीड़ा, सहन नहीं कर पाती।
पशु–पक्षी भी जिससे, मातृत्व भाव थे पाते,
छाया सम जो उसके, पीछे–पीछे आ जाते।
वंचित शिक्षा से भी, रहे न कोई नारी,
नारी–हित में जिसका, योगदान था भारी।
स्मृतियाँ भी जिसकी, हैं बन गयीं कहानी।,
हुई गाँव का गौरव, वह रानी 'सुखरानी'।
इस नारी गौरव का, बार–बार वंदन है,
प्रेमभाव श्रद्धा से, करते अभिनन्दन हैं।

–417/10, नेवाजगंज, चौक, लखनऊ

www.thearyasamaj.org

राजस्थान-समाचार

पूरे परिवार सहित नेत्रदान का संकल्प

कोटा, ६ नवम्बर २०१३। कोटा में नेत्रदान के प्रति जागरूकता लगातार बढ़ती जा रही है। लोग व्यक्तिगत व्यक्तिगत या समूह में आकर नेत्रदान करने का संकल्प कर रहे हैं। यही कारण है कि नेत्रदान का प्रतिशत पिछले वर्ष की तुलना में कई गुना बढ़ गया है। इसी क्रम में एक ऐसा परिवार भी है जहाँ मरणोपरान्त नेत्रदान करना एक परम्परा बन चुका है।

जिला प्रधान आर्य समाज कोटा के अर्जुनदेव चड्ढा का परिवार इसका एक

उदाहरण है जिनके घर में पहला नेत्रदान वर्ष १९८७ में उनके पिता श्री रामलाल चड्ढा का हुआ। जिस समय नेत्रदान के बारे में जानकारी का अभाव था। इसके बाद उनकी पत्नी श्रीमती संतोष चड्ढा का देहान्त १९९७ में हुआ उनका भी नेत्रदान लिया गया। इसी तरह वर्ष २०१० में आपके बड़े भाई श्री बलदेव राज चड्ढा का भी नेत्रदान किया गया।

आप सम्पूर्ण परिवार के १८ सदस्यों ने एकसाथ इस नेक कार्य नेत्रदान महादान का संकल्प लिया जिसमें तीन पीढ़ियाँ शामिल रहीं। १८ वर्षीया साक्षी चड्ढा ने कहा कि मेरे दादी के नेत्रदान होने के कारण वो आज भी इस दुनियां में मौजूद हैं और अमर हैं। इसी तरह मैंने भी नेत्रदान का संकल्प किया है, जिससे मैं मृत्यु के बाद भी किसी नेत्रहीन को रोशनी देकर जीवित कर सकूँ।

सत्यार्थ प्रकाश भेंट

कोटा, २७ अक्टूबर २०१३। संत कंवरराम सिंधी धर्मशाला पंचायत समिति

की ओर से संत कंवरराम साहेब के ७४वें वर्सी महोत्सव के अवसर पर आर्य समाज जिला सभा की ओर से समिति के अध्यक्ष गिरधारीलाल पंजवानी को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डी.एस.सी.एल. के वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक के.के. कौल व आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने महर्षि दयानन्द रचित अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया।

इस अवसर पर गिरधारीलाल पंजवानी ने कहा कि आर्य समाज असहायों की सहायता करता है। श्री कौल ने कहा कि समाजहित में किये जा रहे कार्य मानवता की सच्ची सेवा है।

सिंधी पंचायत समिति द्वारा आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, विज्ञान नगर आर्य समाज के प्रधान जे.एस.दुबे, महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के संस्थापक रामप्रयाद याज्ञिक को शॉल ओढ़ाकर स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन

कोटा, २८ अक्टूबर २०१३। आर्य युवक युवती वैवाहिक सम्मेलन की एक

लंबे समय से चिर परिचित आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। जिसे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने हाथ में लेकर एक प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय कार्य किया है। उक्त विचार आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् डॉ.वागीश आचार्य ने आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन की मीडिया एलबम का विमोचन करते हुए व्यक्त किये। इस अवसर पर अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि अब तक सम्पन्न हुए पांच सम्मेलनों के आशातीत परिणाम सामने आये हैं, इसकी को देखते हुए आर्य परिवारों को रुझान इन सम्मेलनों के प्रति बढ़ रहा है।

हरियाणा-समाचार

चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, झज्जर में अक्टूबर २०१३ में आर्य समाज एवं

भारत स्वाभिमान झज्जर के संयुक्त तत्वावधान में सात-सात दिनों की अवधि के लिए बालिकाओं, बालकों, महिलाओं एवं पुरुषों के चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन २८ दिनों तक चला, जिसमें योग शिक्षक रामनिवास, डा.राजेश बंसल, सुबेदार भरतसिंह एवं महिला पतंजलि योग समिति झज्जर की अध्यक्षा श्रीमती शर्मिला ने प्रशिक्षण प्रदान किया। आर्य समाज झज्जर के उप प्रधान महाशय रतीराम आर्य एवं महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र की श्रीमती मामकोर देवी के संयोजकत्व में प्रशिक्षण शिविर चला। प्रत्येक सात दिवसीय शिविर का समापन यज्ञ से हुआ। पारुल, आरती, कनिका, ऋुति, वर्षा, ऋुति शर्मा, राधिका, निहारिका, कोमल, काजल, चींकी, ईशा, राकेश, मोहित, सचिन एवं अक्षांस नामक १६ होनहार बच्चों को उनके द्वारा नमस्ते करते लेमिनेटेड चित्रों से सम्मानित किया गया। पहली कक्षा के पांच वर्षीय अनमोल बालक ने दैनिक यज्ञ के मंत्रों को कण्ठस्थ कर सुनाया तथा सूर्य नमस्कार, यौगिक जोगिंग के १२ अभ्यास और लगभग ३० आसनों का शानदार प्रदर्शन करके सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

हरदोई-समाचार

आर्यसमाज सण्डीला एक व्यावहारिक कदम

आर्य समाज सण्डीला, हरदोई ने एक व्यावहारिक कदम उठाते हुए दिनांक २७ नवम्बर २०१३ को एक चिन्तन गोष्ठी का आयोजन किया है, जिसमें समाज के सभी वर्गों एवं धर्मानुयायियों को आमंत्रित किया गया है। चिन्तन का विषय है 'शाकाहार क्यों' और 'प्राणियों की रक्षा क्यों आवश्यक है'।

गोष्ठी के निर्णयों के पश्चात इस विषय पर एक सम्मेलन आयोजित करने का विचार है, जिसमें पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब को भी सादर आमंत्रित किया जायगा।

(डा.सत्यप्रकाश आर्य, प्रधान)

वेदप्रचार

११ से १३ नवम्बर २०१३ तक ग्राम धनवार, शाहाबाद, हरदोई में अथर्ववेद पारायण यज्ञ के साथ बड़े धूमधाम से वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रज्ञाचक्षु श्री रामसेवक, हमीरपुर, कु.रेखा, मथुरा व श्री रामसागर सण्डीला का भजनोपदेश हुआ। श्री हरिओम ने वेदमंत्रों का पाठ किया। सीतापुर के श्री रामेन्द्र कुमार आर्य ने आहार शुद्धि, अन्धविश्वास उन्मूलन, मद्यपान से होने वाली हानियों से अवगत कराया। कार्यक्रम का संयोजन राकेश सिंह आर्य, सुभाष चन्द्र आर्य तथा कुलदीप आर्य ने किया तथा अध्यक्षता श्री हरगोविन्द जी ने की। इस अवसर पर कई दम्पत्तियों को यज्ञोपवीत धारण करवाया गया। *(नेतराम आर्य)*

कानपुर-समाचार

अनुकरणीय !

श्री रघुनाथ सिंह आर्य (एल.आई.जी. १३८, बर्रा-४, कानपुर) का जीवन आर्य वीर दल हेतु पूर्णतया समर्पित है। उनकी प्रत्येक साँस में आर्य वीर दल समाहित है। सीतापुर में 'भाईजी' के नाम से विख्यात श्री रघुनाथ सिंह जी ८४ वर्ष की आयु में भी युवाओं से कहीं अधिक सक्रिय हैं।

आपने अपना जन्म दिवस 'आर्य लोक वार्ता' के लिए सदस्य बनाकर मनाया। इन सभी सदस्यों की सहयोग राशि एकत्र कर आपने 'आर्य लोक वार्ता' के खाते में जमा कर दी है। सभी को कार्यालय द्वारा यथाशीघ्र रसीदें मिल जायेंगी। यह हर्ष की बात है कि लोकप्रिय चिकित्सक डॉ.जी.पी.सिंह का आपको पूर्ण सहयोग सुलभ है। डॉ.साहब एवं रघुनाथसिंह आर्य के माध्यम से बनाये गये सदस्यों की सूची यहां प्रकाशित करते हुए हम श्री रघुनाथ सिंह आर्य के शतायु जीवन एवं सुस्वास्थ्य की कामना करते हैं-

१-रघुनाथ सिंह आर्य, बर्रा-४
२-डॉ.जी.पी.सिंह, बर्रा-४
३-प्रेम नारायण श्रीवास्तव, बर्रा-६
४-जगत नारायण आर्य, रतनलालनगर
५-क्षमा वाजपेई, रतनलाललनगर
६-प्रदीप कुमार एडवोकेट, बर्रा-४
७-वीरसिंह चौहान, बरा-८
८-शैलेन्द्र सिंह कटारिया, बर्रा-२
९-सतेन्द्र बाबू आर्य, जनतानगर
१०-अनुज कुमार श्रीवास्तव, सिविललाइन्स

विशेष-कानुपर के 'आर्य लोक वार्ता' के अन्य सदस्य गण भी यदि चाहें तो श्री रघुनाथसिंह आर्य अथवा डॉ.जी.पी.सिंह के पास सहयोग राशि जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। इसी प्रकार नये पाठक भी सदस्यता ग्रहण कर सकते हैं।

आर्य परिवार विवाह युवक-युवती परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) द्वारा आयोजित किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के छठवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। यह सम्मेलन रविवार, १९ जनवरी २०१४ को प्रातः १० बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र.) में आयोजित किया जाएगा। दिल्ली में सातवाँ आयोजन २ फरवरी, २०१४ को होगा। अतः जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं, अथवा सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम २०० रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर "दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१" के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र इन्दौर हेतु १ जनवरी, २०१४ तथा दिल्ली हेतु १५ जनवरी, २०१४ तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे।

-अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (०९४१४१९७४२८)

दिल्ली-समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मंत्री
डा. सच्चिदानन्द शास्त्री नहीं रहे

आर्य जगत के विद्वान, वरिष्ठ आर्य नेता, हैदराबाद सत्याग्रह के सेनानी, आर्य

समाज की सर्वोच्च शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की वर्षों तक मंत्री के रूप में सेवा करने वाले डॉ.सच्चिदानन्द शास्त्री जी का ९० वर्ष की आयु में ३० अक्टूबर २०१३ की मध्यरात्रि आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार उनके पैत्रक निवास ग्राम सुरसा, हरदोई में ३१ अक्टूबर २०१३ को पूर्ण वैदिक रीति से हुआ।

डॉ.सच्चिदानन्द शास्त्री हरदोई जनपद के स्वनामधन्य आर्य समाजी नेता एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं.रघुनन्दन शर्मा के सुपुत्र थे। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से निकले जिन स्नातकों ने विशेष ख्याति अर्जित की तथा आर्य समाज में अपना उच्च स्थान बनाया, शास्त्री जी का उनमें प्रमुख स्थान है। आर्य समाज द्वारा संचालित आन्दोलनों, सत्याग्रहों में उन्होंने सक्रिय भाग लिया, यातनाएँ झेलीं किन्तु कभी भी विचलित नहीं हुए।

लखनऊ विश्वविद्यालय में नियमित रूप से अध्ययनरत होकर आपने एम.ए. तथा पी-एच.डी.(भाषा विज्ञान) में उपाधि अर्जित की। आप कई वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. में उपदेशक रहे तथा कालान्तर में 'आर्य मित्र' के सम्पादक तथा सभा के मंत्री पद पद भी आसीन हुए। जब सार्वदेशिक सभा के रामलीला मैदान स्थित भवन पर अनियमित रूप से स्वार्थी तत्वों ने कब्जा कर लिया तो शास्त्री जी ज्वालापुर हरिद्वार चले आये थे, और प्रायः यहीं रहने लगे। सच्चिदानंद शास्त्री एक कुशल वक्ता, आर्योपदेशक और आर्यनेता थे। आपका रहन सहन सादा और सात्विक था। हरदोई जनपद तथा उ.प्र. के आर्यजनों को आप पर सदा गर्व रहेगा।

गुजरात-समाचार

शकुन्तला स्मारक व्याख्यान

महिमामयी माता स्व.शकुन्तला जी के जन्म दिवस ०५.१०.१३ को श्रीअरविन्द

साधना केन्द्र, विद्यानगर, आनन्द (गुजरात) में प्रथम शकुन्तला रामदेवी स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया गया। गुजरात की विदुषी साधिका ज्योति बहन ने इस अवसर पर श्री अरविन्द के योग पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। सभी प्रबुद्ध साधक साधिकाओं को शकुन्तला जी की सूक्ष्म उपस्थिति की अनुभूति हुई। इस कार्यक्रम हेतु दिल्ली से आकर पीयूष, डॉ.नीलिमा और प्रणव आदि साधकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। समारोह की अध्यक्षता श्री अरविन्द दर्शन के अधिकारी विद्वान् डॉ.देवकीनन्दन श्रीवास्तव, प्राक्तन प्रोफेसर, शान्तिनिकेतन (प.बंगाल) ने की। सामूहिक प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। संयोजकों ने प्रतिवर्ष ५ अक्टूबर को शकुन्तला स्मारक व्याख्यान आयोजित करने का संकल्प व्यक्त किया। *(प्रणव)*

मुंबई-समाचार

आर्य समाज सांताक्रुज में वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज सांताक्रुज (प.) मुम्बई द्वारा गुरुवार १९ सितम्बर से रविवार २२ सितम्बर २०१३ तक आर्य समाज सांताक्रुज के बृहर्द सभागार में वेद प्रचार समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन सायं ६.३० से ९.३० बजे तक चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ तथा भजन, प्रवचन का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा थे प्रो.विनय विद्यालंकार जी (उत्तराखण्ड)। गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय रामलिंग येडशि तथा ब्राह्मणवृन्द पं.नामदेव आर्य, विनोद कुमार शास्त्री, नरेन्द्र शास्त्री एवं प्रभंजन पाठक ने वेदपाठ किया।

आर्य समाज सांताक्रुज के प्रधान चन्द्रगुप्त आर्य तथा लालचन्द आर्य ने आमंत्रित अतिथियों का अभिनन्दन किया। प्रधान जी ने सभी उपस्थित विद्वानों, अतिथियों, श्रोताओं तथा सहयोगियों एवं दानदाताओं का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। महामंत्री संगीत आर्य ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया। शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

www.thearyasamaj.org

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज इन्दिरा नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज इन्दिरा नगर का ३५वाँ वार्षिकोत्सव ८ से १० नवम्बर २०१३ तक सेक्टर-६, वैशाली इन्क्लेव स्थित आर्य समाज मंदिर में समारोह पूर्वक मनाया गया। उभय सत्रों में सम्पन्न होने वाले यज्ञ के ब्रह्मा थे श्री सत्यदेव वानप्रस्थी। विभिन्न सत्रों के कार्यक्रमों का संचालन एवं संयोजन क्रमशः श्री जयप्रकाश आर्य, इं.डा.वेद प्रकाश, रामेन्द्रदेव वर्मा, श्रीमती कान्ति कुमार, डोरीलाल आर्य एवं लक्ष्मण प्रसाद आर्य ने किया। प्रतिदिन पं.नरेशदत्त, बिजनौर के भजनोपदेश तथा आचार्य डॉ.रूपचन्द्र दीपक के वेदोपदेश हुए। रविवार को प्रातःकालीन सत्र में युवा सम्मेलन हुआ; जिसमें आर्य वीर दल के शिक्षक श्री सत्यनारायण आर्य (फखरपुर, बहराइच) द्वारा प्रशिक्षित बच्चों ने सामूहिक व्यायाम का प्रदर्शन किया। डॉ.वीरेन्द्र परिव्राजक ने ध्यानयोग की महत्ता पर प्रकाश डाला। श्री सतीशचन्द्र बिसारिया, जिला प्रधान एवं प्रत्यूषरत्न पाण्डे जिला मंत्री आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ ने आयोजकों को बधाई दी।

सायंकालीन अंतिम सत्र में आचार्य ओजोमित्र शास्त्री की प्रेरक उपस्थिति में डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता, का 'राष्ट्रनिर्माण में महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज का योगदान' विषय पर ६५ मिनट का व्याख्यान हुआ। आर्य समाज के प्रधान श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी तथा मंत्री श्री डोरीलाल आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आर्य समाज मानसरोवर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मानसरोवर, एल.डी.ए.कालोनी का वार्षिक समारोह २७.१०.१३ को वैदिक विद्वान् श्री नरदेव आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री संतोष कुमार वेदालंकार एवं पं.वेदव्रत अवस्थी के आचार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् श्री रुद्रस्वरूप के सुमधुर भजन एवं वैदिक विद्वान् श्री प्रताप कुमार साधक का वेदोपदेश हुआ। डॉ.रूपचन्द्र दीपक ने बच्चों को पुरस्कार वितरित किये तथा आशीर्वाद दिया। प्रबोध कुमार जौहरी ने विद्वानों को सम्मानित किया।

श्री रुद्रस्वरूप ने 'आइये खुद को बदल लें, जग बदल ही जायेगा' गीत सुनाया। श्री साधक जी ने 'मैं कौन हूँ, कहाँ जाना है?' विषय पर विचार व्यक्त किये तो वेदालंकार जी ने 'मृत्यु बंधन नहीं है' विषय पर सदुपदेश किया। इस अवसर पर विभिन्न आर्य समाजों के प्रतिनिधिगण तथा क्षेत्रीय नागरिक बड़ी संख्या में मौजूद थे। ऋषिलंगर के साथ उत्सव का समापन हुआ। *(डॉ.मोहनलाल अग्रवाल)*

अमर्त्य उपनयन

वरिष्ठ कवयित्री एवं श्री वी.एस.पाण्डेय (से.नि.कार्यालयाध्यक्ष, अपराध अनुसंधान विभाग, लखनऊ) के सुपौत्र तथा आर्य उप्रप्रतिनिधि सभा, लखनऊ के जिला मंत्री प्रत्यूषरत्न पांडे के सुपुत्र चि.अमर्त्य का उपनयन संस्कार 'मंडप' गेस्ट हाउस, ठाकुरगंज में बहद् समारोह पूर्वक १३.१०.१३ को सम्पन्न हुआ।

प्रख्यात वेदोपदेशिका श्रीमती निष्ठा विद्यालंकार ने उपनयन संस्कार कराया। उन्होंने वेदोपदेश के साथ ही 'माता पिता विधाता, महिमा तेरी निराली; चंदा को शीतलता दी, सूरज में गर्मी डाली' गीत गाकर जनसमूह को अलौकिक आनन्द की अनुभूति कराई। वेदविद् डॉ.रूपचन्द्र दीपक ने ब्रह्मचारी अमर्त्य को उसके कर्त्तव्यों का बोध कराया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य, सम्पादक, आर्य लोक वार्ता ने सभी बच्चों का वेदारम्भ और उपनयन संस्कार उचित समय पर कराने का परामर्श दिया। आपने कहा- तिलकोत्सव के साथ उपनयन की आर्ष परम्परा नहीं है।

इस अवसर पर श्री जयप्रकाश शुक्ल ने काव्यपाठ किया। अनेक आर्य समाजों एवं संस्थाओं के पदाधिकारीगण तथा बड़ी संख्या में उपस्थित अतिथियों ने चि. अमर्त्य को आशीर्वाद दिया तथा प्रीतिभोज में भाग लिया। *(श्रीशरत्न पाण्डेय)*

जलेश्वर मुनि का जन्मदिवस

आर्य जगत के गौरव मुनिवर जलेश्वर जी के ८९वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में श्री पाल प्रवीण के अलीगंज स्थित 'योगाश्रम' पर वैदिक यज्ञ एवं विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें यज्ञ के पश्चात् श्रीमती प्रमोद कटियार ने 'आया त्योहार दिवाली का', श्रीमती शोभा सिन्हा ने 'कनकी कनकी मत जोड़ प्राणी', सुरेश चन्द्र मिश्र ने 'वेद को पढ़ना पढ़ाना चाहिए', श्रीमती आदर्श गुप्ता ने 'ईश्वर तुम्हीं दया करो' भजन प्रस्तुत किये। गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने दीप- संदर्भ से चिन्तन देते हुए अनेक दोहों का पाठ किया। सेवक राम आर्य ने ऋग्वेद के एक मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की। कार्यक्रम में सर्वश्री रामलखन शुक्ल, एस.आर.नागपाल, ए.एन.अरोड़ा, श्रीमती कमलेश पाल, सीता मिश्रा, राजपति शुक्ला आदि की सहभागिता उल्लेखनीय रही। यजमान पालप्रवीण ने धन्यवाद ज्ञापन किया। *(विनम्र)*

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह

आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह अब मार्च २०१४ में आयोजित होगा। नवम्बर २०१३ में उमानाथ बली प्रेक्षागृह में लखनऊ महोत्सव एवं अन्य कार्यक्रमों के चलते समय बदलना पड़ रहा है।

समारोह में प्रख्यात आर्य नेता श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम (कोलकाता) तथा श्री अर्जुनदेव चड्ढा 'आर्यलोक रत्न' (कोटा राजस्थान) इत्यादि शीर्ष नेता पधार रहे हैं।

समारोह की सफलता एवं सम्पन्नता हेतु जो दानदातागण सहयोग करना चाहते हैं वे कृपया ३१.१२.२०१३ तक सहयोग राशि नकद अथवा चेक द्वारा प्रेषित कर दें। इसके अतिरिक्त आप सहयोग राशि 'आर्य लोक वार्ता' के पक्ष में बैंक ऑफ बड़ौदा के बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं, जिसका विवरण इसी पृष्ठ पर दिया गया है। स्मरण रखें, सम्मान समारोह का मुख्य उद्देश्य वैदिक विचार धारा का प्रचार प्रसार है। *-डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक*

120वीं जयन्ती

गोनी (हरदोई) के विद्याविनय सम्पन्न वैद्य

स्व. देवदत्त त्रिपाठी

आयुर्वेदाचार्य, शास्त्री

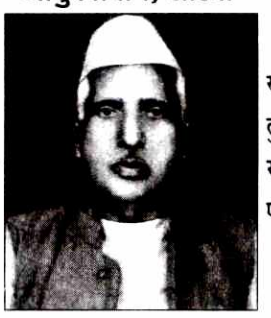

दूर किये दुर्गुण दुरित, लाये सुखद सुकाल।
देवदत्त ऋषि-वैद्य की भव में कहाँ मिसाल।।

खोजा, पर पाया नहीं- तुम सा व्यक्ति-विराट।
सदाचार संकल्प के- एक छत्र सम्राट।।

१९६६ - १९८२

सम्पादक की डायरी

शिलान्यास

दि.२४.१०.१३ : श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट एवं श्रीमती शालिनी कुमार आर्कीटेक्ट के गोमती नगर, विशाल खण्ड-४ में नवविकसित प्लाट पर शिलान्यास (भूमिपूजन) वैदिक यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। श्री अरविन्द की श्रद्धेया माताजी की उपस्थिति एवं आशीर्वाद ने अवसर को गरिमा प्रदान की।

शान्ति यज्ञ

दि.२५.१०.१३ : स्व.ओंकार नाथ मेहरोत्रा की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र श्री राजेश मेहरोत्रा के मानस विहार कालोनी, इन्दिरा नगर आवास पर वैदिक विधानानुसार शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें स्व.मेहरोत्रा के सुपुत्र राजेश, सुपुत्री कु.बबली, मित्र श्री रजत कुमार तथा बड़ी संख्या में पारिवारिक जनों ने सम्मिलित होकर दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

पुण्यतिथि

दि.२७.१०.१३ : ओमैक्स, टावर नं.६, फ्लैट नं.६०३, गेट नं.३, गोमती नगर। पतंजलि योग समिति, लखनऊ के साहित्य प्रभारी श्री मदनगोपाल सिंहल की विदुषी धर्मपत्नी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में यज्ञ-सत्संग का आयोजन हुआ, जिसमें पतंजलि योग समिति के प्रमुख संचालक एवं प्रशिक्षक योगाचार्य श्री पीयूषकान्त, श्रीमती मंजू श्रीवास्तव, गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव, अलोपी शंकर, नरेश दीक्षित, जवाहरलाल शाह तथा विशेष अतिथि श्री राजेन्द्र मोहन सक्सेना, इंजीनियर इत्यादि ६ मर्मानुरागियों ने भाग लिया। आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न यज्ञ में श्री विकास सिंहल, अमित सिंहल, श्रीमती कविता, श्रीमती शिल्पी ने यजमान आसन को सुशोभित किया। योग शिक्षिका श्रीमती मीना दीक्षित ने 'ज्ञानरूप भगवन' भजन प्रस्तुत किया।

गृह प्रवेश

दि.०३.११.१३ : दीपावली के पावन प्रभात में श्री देवेन्द्र कुमार आत्मज श्री सियाराम कुशवाहा (आर्य पुरोहित) के नये आवास १६/७१८ इन्दिरा नगर में गृह प्रवेश का कार्यक्रम वैदिक विधि से डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। देवेन्द्र जी की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी, पुत्री तेजस्विनी, विदुषी, सुपुत्र यश के अलावा राघव राठौर, गजेन्द्र सिंह, किशोर इत्यादि ने आयोजन को अपनी उपस्थिति से सफल बनाया। श्री देवेन्द्र कुमार ने आगंतुकों का विधिवत् स्वागत किया तथा यज्ञ की सुन्दर व्यवस्था की। श्री सियाराम जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

यज्ञ-सत्संग

दि.०४.११.१३ : २/६ विशाल खण्ड, गोमती नगर में सुश्री सुमन पाण्डे के आवास पर यज्ञ सत्संग का आयोजन किया गया। यज्ञ में पतंजलि योग समिति के प्रतिनिधि श्री बाबूराम, आर्य समाज गोमती नगर के सदस्य श्री बाल गोविन्द पालीवाल, श्रीमती सरला त्रिपाठी, वी.पी.सिंह, अमित त्रिपाठी, राहुल प्रकाश अवस्थी इत्यादि ने भाग लिया।

काव्य गोष्ठी

अवधी वारिधि चन्द्रशेखर सिंह 'चन्द्र' की स्मृति में काव्य गोष्ठी क्षेत्रीय विकास संस्थान, बख्शी का तालब में १०.११.२०१३ को आयोजित की गयी जिसके अध्यक्ष आचार्य नन्द किशोर शर्मा तथा मुख्य अतिथि नरेन्द्र भूषण थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में पवन सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ अमित अनपढ़ की वाणी वन्दना से हुआ। अशोक पाण्डेय 'अशोक' ने 'चन्द्र' के कृतित्व और उनके साहित्यिक अवदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने काव्यमय भाव सुमन अर्पित किये- 'अवधी वारिधि 'चन्द्र' की, हुई ज्योत्सना मंद। श्वास साधना रुक गई, रहा अधूरा 'छंद'।'

इसके अतिरिक्त डॉ.अशोक शर्मा, विनय कुमार वाजपेयी, आदित्य चतुर्वेदी, प्रवीण शुक्ल, मधुकर, रूपम, हरिप्रकाश हरि, वीरेन्द्र वाजपेयी, अमित अनपढ़, चेतराम अज्ञानी, तेज सिंह, बी.डी.सिंह, वीरेन्द्र पाण्डेय, 'अशोक' आदि ने काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन योगेश सिंह ने किया। *(विनम्र)*

35वां छन्दकार दिवस एवं लोकार्पण

ब्रज कुमुदेश पत्रिका परिवार एवं निखिल हिन्दी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में गोमती प्रसाद पाण्डेय 'कुमुदेश' की ६०वीं जयन्ती ३५वें छन्दकार दिवस के रूप में यू.पी.प्रेस क्लब में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री गंगारत्न पाण्डे की अध्यक्षता में मनायी गयी। मुख्य अतिथि डॉ.उषा सिन्हा थीं। समारोह में आमंत्रित साहित्यकारों में डॉ.विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद', प्रो.नेत्रपाल सिंह तथा सरस कपूर के नाम प्रमुख हैं। इस अवसर पर हास्य कवि 'सनकी' की तीन पुस्तकों 'अब तक की यात्रा', 'इधर की उधर' तथा 'अपनी अपनी दृष्टि' का लोकार्पण सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर वरिष्ठ कवयित्री रामा आर्य 'रमा', महेश प्रसाद पाण्डेय, भोलानाथ अधीर, रमन लाल अग्रवाल 'रम्मन', डा.रंगनाथ मिश्र 'सत्य', विनम्र, डा.अशोक शर्मा, जगदीश शुक्ल, प्रमोद द्विवेदी, शिवभजन कमलेश, सुरेश आवारा, ऋतुराज पाण्डे आदि ने कृतिकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	-	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	-	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	-	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	-	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	-	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	-	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 00500 2000 00579
खाते का प्रकार-चालू खाता
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, हजरतगंज लखनऊ।

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
डॉ.(श्रीमती)वीना कटियार, फर्रूखाबाद

मुख्य संरक्षक
अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ

संरक्षक
प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

आवश्यक सूचना

कृपया लखनऊ स्थित शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें-

डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड,
इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016